श्रीगोपीजन वल्लभो जयति

भूमिका ।

प्रेमहिके बन्धन बँधे, प्रेम रसिक मथुरेश ।
प्रेम पंथ के पथिक हम, प्रेम हमारा देश ।

ACC

प्रेम ।
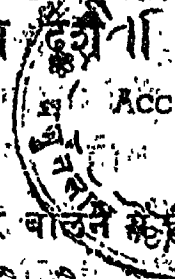
(प्रेम) यह कैसा प्यारा शब्द है जिसके सुनने और बोलने से ही आनंद प्राप्त होता है सारे जगत के व्यवहारों का मूल यही है और मोक्ष अथवा परमानन्द की प्राप्ति का भी कारण प्रेम ही है ।

हर एक जीव को अपने आत्मा में प्रेम है वो चाहता है कि हमारी आत्मा सदा सुखी रहे अपनी आत्मा के सुख के वास्ते दूसरों से प्रेम किया जाता है ।

स्त्री पुत्र भ्राता आदि सब इसी कारण से प्यारे लगते हैं कि वोह सब अपनी आत्मा को सुख देने वाले हैं और जिन प्राणियों से आत्मा को दुख पहुंचता है वे शत्रु समझे जाते हैं ॥ अर्थात आत्मा को सुख देने वाले प्राणी अपने इष्ट, मित्र, और दुख देने वाले, दुष्ट और अनिष्ट कहे जाते हैं इस का कारण यही है कि हम को अपनी आत्मा में प्रेम है धन दौलत संसारी वैभव और इन्द्रियों के विषय सब क्यों प्यारे हैं ? अपनी आत्मा को सुख देने वाले, उत्तम भोजन वस्त्र आदि पदार्थों में प्यार क्यों है ? अपने सुख के लिये, सर्प व्याघ्र आदि जीव मनुष्य को क्यों प्यारे नहीं लगते ? वो आत्मा को भय और दुख के देने वाले हैं नितान्त जीव की प्रवृत्ति संसार में केवल सुख के लिये है और इसका कारण आत्मा में प्रेम ही सिद्ध होता है ।

वोही प्रेम जब परमात्मा में हो, तो जन्म मरण के दुख और संताप से छुटकारा होकर परमानन्द मोक्ष की प्राप्ति का कारण हो जाता है ऐसी स्थिति में मानना पड़ेगा कि जगत के सब व्यवहारों तथा परमानन्द मोक्ष के लाभ का कारण एक प्रेम वस्तु ही है ॥

(प्रेम से योग का फल)

योग अभ्यास करने से मन स्थिर और एकाग्र होता है और मन के एकाग्र होने से सिद्धियें प्राप्त होती हैं और आत्म साक्षात्कार होकर मोक्ष मिलती है।

परन्तु योग अभ्यास अत्यन्त कठिन है इस समय में यम नियम जो पहली सीढ़ीयें अष्टांग योग की हैं उनपर चढ़ना ही किसी से नहीं बन पड़ता तो आगे की मंज़िल आसन प्राणायाम प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि तक मनुष्य की गति अत्यन्त ही असंभव है। ऐसी स्थिति में मन को क़ाबू में लाना क्योंकर हो सकता है और बिना मन के स्थिर और बस में होने के शान्ति कैसी और शान्ति के बिना परमानन्द का लाभ क्यों कर हो सकता है।

प्रेम ऐसा पदार्थ है कि सहज ही इसके द्वारा मन एकाग्र होजाता है। देखिये मनुष्य का प्रेम मनुष्य के साथ आपने सुना होगा लैला मजनू आदि क़िस्से मशहूर हैं।

लैला के प्रेम में मजनूं की चित्त वृति लैला रूप हो गई थी उसे सोते बैठते खाते पीते लैला ही लैला नज़र आती थी मन उसका लैला आकार होगयाथा इसी तरह़ और पंच महा भूत के विकार-मानुष शरीरों में जहां जिसको पूरा इश्क़ हुआ वहां चित्त तदाकार होजाता है इसी वास्ते कहा है कि इश्क़ मजाज़ी (अर्थात् मनुष्य का मनुष्य में प्रेम) इश्क़ हक़ीक़ी की सीढ़ी है। जब इश्क़ या प्रेम की यह ताक़त सिद्ध हुई कि मन को एकाकार कर देता है और जिस वस्तु में प्रेम हो उसके तदाकार मन हो जाता है तो परमात्मा में प्रेम क्यों नहीं मन को परमात्मा के तदाकार बनावैगा और जब प्रेम से मन परमात्मा रूप होगया तो योग का फल स्वतः सिद्ध प्राप्त होगया बस सिद्धान्त यह निकला कि जो फल अत्यन्त कठिन योग के अभ्यास से मिलता है वो प्रेम से सहज़ ही प्राप्त हो सकता है इसी-कारण महात्माओं ने कहा है एक महात्मा यहा योगी का वचन है।

प्रेम बराबर योग ना ❀ प्रेम बराबर ज्ञान।
प्रेम भक्ति बिन साधुवा ❀ सब ही थोथा ध्यान।

प्रेम लता जब लहरै। मन बिना योग ही ठैरे॥
कोऊ चतुर खिलारी खेलै। वो प्रेम पियाला झेलै॥

श्री भगवत गीता में भगवान फ़रमाते हैं कि

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योपि मतोऽधिकः॥
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥
योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना॥
श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्त तमो मतः॥

अर्थ इसका ये है कि तप करने वालों से योगी बड़ा है और ज्ञानियों से भी योगी बडा है और यज्ञादिक कर्म करने वालों से भी योगी अधिक है॥ और सब योगियों में उस मनुष्य को मैं युक्त तम अर्थात् सबसे बड़ा युक्त मानता हूं जो अन्तरात्मा मुझ में लगाये हुए श्रद्धा भाव से मुझ को भजता है। इसका यह प्रयोजन है कि योगी तो सब से बडा है ही परन्तु योगी से भी उसको मैं बड़ा समझता हूं जो सच्चे दिल से प्रेम पूर्वक मुझको भजता है॥ तो यह बात स्पष्ट हो गई कि प्रेम पूर्वक भजन का दर्जा योग से भी ऊंचा है॥

प्रेम शब्द को अरबी भाषा में इश्क़ और फ़ारसी में उलफ़त कहते हैं, एक महात्मा फ़रमाते हैं कि

जब उमड़ा दरिया उलफ़त का हर चार तरफ़ आबादी है॥
हर रात नई इक शादी है हर रोज़ मुबारिक बादी है॥
रुखँदा है रंगीं गुल का खुश शादी शाद मुरादी है॥
नित राहत हैं नित फ़रहत है नित रंग नई आज़ादी है॥

जब प्रेम का समुद्र उमड़ता है तो ऊपर लिखी हुई दशा होती है अर्थात् योगियों को बड़े कठिन साधनों में से जो परम आनन्द का लाभ होता है वो प्रेमी को सहज ही प्राप्त है॥ इसमें बहुत बड़ी युक्ति यह है कि जिस वस्तु में प्रेम आला दर्जे को पहुँच जाता है प्रेमी उस प्रिय वस्तु को भजते

भजते उसी का रूप हो जाता है जैसे लट भृंगि का न्याय प्रत्यक्ष है भृंगी एक कीड़ा का नाम है जो भिन्न २ शब्द किया करता है जब वो भृंगी लट एक कीड़े को पकड़ कर उसे अपना मीठा मीठा शब्द सुनाता है तो लट को वो शब्द बहुत ही प्यारा मालूम होता है यहां तक कि लट उस भृंगी कीड़े पर आशिक़ होकर उसी के ध्यान में तन्मय हो जाता है फिर उसकी तन्मयता इस दर्जे बढ़ जाती है कि लट अपना स्वरूप छोड़कर भृंगी रूप बन जाता है इसी प्रकार परमात्मा में जब सच्चा प्रेम लग जाता है तो जीव तन्मय होकर परमानन्द स्वरूप स्वयं बन जाता है।

और भी एक दृष्टान्त है कि एक मनुष्य ने किसी महात्मा की बहुत सेवा करके प्रार्थना करी कि मुझे ईश्वर मिलने का मार्ग बतलाइये महात्मा ने उससे प्रश्न किया कि संसार भर में तुझे सबसे अधिक प्यारी कौन वस्तु है, वह बोला महाराज मुझे तो मेरी एक भैंस अत्यन्त प्यारी लगती है उससे अधिक और कोई चीज़ प्यारी नहीं लगती महात्मा ने एक कोठरी उस मनुष्य को बतलादी और आज्ञा दी कि इसमें बैठकर चालीस दिन तक अपनी प्यारी भैंस का ध्यान कर दूसरी किसी चीज़ की तरफ़ चित्त न चलाना, शिष्य ने ऐसा ही किया जब चालीस रोज़ ख़त्म होगये और कोठरी का दरवाज़ा खोलकर गुरू ने आज्ञा दी कि बाहिर आजा उस समय शिष्य दरवाज़े के पास आकर अन्दर ही खड़ा रहा बाहिर क़दम न रख सका तब महात्मा बोले बाहिर क्यों नहीं आता शिष्य बोला कि महाराज़ दरवाज़ा छोटा है मेरे सींग बडे बडे हैं इसमें से मैं कैसे निकलूं बस ज़ाहिर होगया कि भैंस का ध्यान करते करते मनुष्य भैंस रूप ही होगया॥ प्रयोजन यह निकला कि जिस वस्तु का प्रेम पूर्वक ध्यान किया जावै ध्यान करने वाला धेय वस्तु के आकार होजाता है तो सत्चिदानन्द परमेश्वर के ध्यान से मनुष्य परमेश्वर स्वरूप क्यों नहीं होगा परन्तु प्रेम के बिना न भजन में मन लग सकता है न ध्यान हो सकता है, प्रेम पदार्थ ही ऐसा रत्न है कि प्रिय वस्तु में मन को लगा देता है।

और देखिये संस्कृत में एक विद्वान ने कहा है

बन्धनानि खलु सन्ति बहूनि प्रेम रज्जु कृत बन्धन मन्यत्।
दारु भेद निपुणोऽपि षडङ्घ्रि र्निश्चलो भवति पंकज बद्धः॥

प्रेम की रस्सी का बन्धन और सब बन्धनों से मज़बूत है क्योंकि भौंरे को यदि लकड़ी के बक्स में बन्द कर दिया जावे तो उस लकड़ी को काट कर भौंरा बाहिर आजाता है परन्तु अत्यन्त कोमल कमल में जब भौंरा प्रेम से बंद होजाता है तो उसे काट कर बाहिर नहीं आता वहीं प्राण देदेता है इस लिये प्रेम का बन्धन और बन्धनों से बड़ा है ,, मन को हट करके प्राणायाम के ज़रिये से रोका जाता है तो समाधि अवस्था में कैद तो हो जाता है परन्तु जहां समाधि डिगी फ़ौरन् बाहिर आजाता है और चंचल होजाता है वोही मन जब प्रेम के बस हरि चरण कमल में अटक जाय तो फिर वहां से टल नहीं सकता ,, इस सारे लेख का तात्पर्य्य यही है कि योग आदिक साधनों के द्वारा मन का बस में होना अति ही कठिन है प्रेम के ज़रिये से जब वो कहीं लग जावे तो स्थिरता और शान्ति को प्राप्त होजाता है नित्तान्त प्रेम से योग का फल सहज हीं प्राप्त होजाता है ।

मन म परमात्मा का प्रेम क्यों कर होय ।

जब यह बात ऊपर के लेख से साबित हुई कि प्रेम ही सारे संसार के व्यवहारों का मूल और प्रेम ही मोक्ष का कारण है और प्रेम से अति सहज मन की स्थिरता और शान्ति होकर परमात्मा की प्राप्ति होती है तो अब यह सवाल पैदा होता है कि मन में परमात्मा का प्रेम क्योंकर उत्पन्न हो ? इसका उत्तर यह है कि भगवत कृपा के बिना भगवान् में मनको प्रेम नहीं हो सकता केवल भगवत कृपा ही भगवद्भक्ति का कारण है किसी यत्न से इस अमूल्य पदार्थ का लाभ नहीं हो सकता ॥ तब यह सवाल पैदा होता है कि भगवत कृपा क्योंकर होवै उसका उत्तर सहज ही सिद्ध है कि प्राणियों पर भगवान की अहैतुकी कृपा सर्व साधारण देखने में आती है,, वोह जगत्पिता और जगतपति है ॥ देखिये प्रथम ही जीव को गर्भ में भरण पोषण करता है फिर जब प्राणी गर्भ से बाहिर आता है तो माता के स्तन में दूध पैदा कर देता है फिर अन्न खाने को देता है, मनुष्य को ज्ञान इन्द्रियें कर्म इन्द्रियें और विचार शक्ति देकर विद्या ग्रहण कराता है प्रत्येक क्षणमें प्रत्येक स्थान पर रक्षा करता है, मनुष्य कैसा ही कुकर्मी और परमेश्वर की आज्ञा विरुद्ध चलता है तौ भी उसे खाने पीने को देता है ऐसा दयालु कृपालु ईश्वर बिना किसी यत्न के ही जीवों का प्रति पालक है निर्हेतु

कृपा उसकी सिद्ध होती है ऐसी स्थिति में मनुष्य उस दयालु कृपालु परमात्मा में प्रेम न करके और और साधनों में काल व्यतीत करै यह हमारी सर्वथा भूल और जडता है हम को उसकी कृपा के लाभार्थ किसी यत्न की आवश्यकता नहीं है केवल सच्चे दिल से उसकी विनय और प्रार्थना करने पर वोह प्रसन्न होकर प्रेम पदार्थ बख्श देता है, इसके उपरान्त विचार कीजिये कि मन मनुष्य का किस वस्तु को अधिक चाहता है ? एक तो सुन्दर मनोहर रूप पर आसक्त होता है दूसरे किसी के गुण सुन कर लुभा जाता है ॥ संसार में जितने रूपवान् और गुणवान् प्राणी नज़र आते हैं सब अनित्य और विनाशी हैं ,, परमात्मा ने राम कृष्णादि स्वरूप धारण करके प्रकट कर दिखाया है कि सुन्दरता और रूप लावण्य जो मन को हरने वाली वस्तु है वो नित्य अखण्ड अविनाशी अलौकिक वस्तु इस दिव्य शरीर में विद्यमान है हज़ारों ग्रन्थ और महात्माओं के सानुभव लाखों वचन प्रमाण हैं जैसी अलौकिक सुन्दरताई राम कृष्ण स्वरूपों में है वैसी और किसी स्थान में किसी पदार्थ में किसी काल में भी नहीं हो सकती तो यदि खूबसूरती पर मन चलै तो इन स्वरूपों को छोडकर और कहां प्राप्त हो सकती है यदि गुणों पर रीझना चाहै तो परमात्मा से अधिक दयालुता आदि गुण कहां प्राप्त हो सकेंगे ,, ऐसी स्थिति में रूप और गुण दोनों सामग्री जो मन को आसक्ती का कारण है परमात्मा में विद्यमान है तो भी मन को परमात्मा में प्रेम होने के लिये और किस वस्तु की आवश्यकता रही ॥ केवल इतनी कि उसके गुणानुवाद का श्रवण और कीर्तन किया जावे और माधुर्य्य का चिन्तवन मन में लगा रहै फिर क्या है अवश्य ही प्रेम का अङ्कुर क्षण क्षण में वृद्धि को पाकर मन को प्रेमाकार कर देवैगा ,, और इससे बढकर कोई साधन प्रेम वृद्धि का नहीं है कि प्रेमी महात्माओं का सत्संग रहै श्रवण कीर्तन अखण्डित जारी रहै ऐसा होने पर शीघ्र ही वो करुणा सागर नट नागर रूप उजागर गुण आगर भगवान अपने जनों को अपना लेता है इसमें कोई सन्देह नहीं करना चाहिये ।

प्रीति के दरजे और प्रेम का स्वरूप ।

प्रीत यानी मुहब्बत के दरजों के जाने बिना यह नहीं मालूम हो सकता

कि प्रेम या इश्क शब्द किस अवसर पर चरितार्थ होता है और न मनुष्य यह जान सकता है कि हमारे अन्तःकरण में किस दरजे की प्रीति है,, इस कारण प्रीति के दर्जे अर्थात् श्रेणी का वर्णन किया जाता है।

प्रथम जब मनुष्य किसी के गुण सुन करके या उसे देखतेही उस को चाहने लगता है तो इसका नाम रति है,, महात्मा हंसदासजी ने एक गुदना लीला निर्माण की है उसमें श्री किशोरीजी के मुखारबिन्द से श्री ब्रजराज बिहारीजी महाराज के सन्मुख जो प्रीति के दर्जे वर्णन हुए हैं उस में रति का लक्षण यह लिखा है।

(दोहा) गुण सुन जाके देख दृग जामें मन लगजाय।
रति ताही को नाम है प्रथम प्रीति दरसाय॥

रति अवस्था के अनन्तर जो प्रीति की दशा होती है उसका नाम प्रेम है और वह कितनेही संकट और विघ्न उपस्थित हो जाने पर घट नहीं सकता न उसमें लोक लाज का भय रहता है न किसी यत्न से वो हालत मिटाई जासकती है आधे दोहे में उसका लक्षण कहा है,,

(कैसेहु संकट विघ्न सों घटै नहीं सो प्रेम।)

इसके बाद स्नेह है उसका यह लक्षण है कि जब चित्त पिघलने लगे और अपने प्यारे की याद में नैनों से नीर जारी होने लगै तब समझना चाहिये कि स्नेह दशा उत्पन्न हुई उसका लक्षण यह है,,

(द्रवी भाव जब चित्त व्है यही स्नेह को नेम।)

वो स्नेह दो प्रकार का होता है एक घृत के समान दूसरा मधु के समान कारण अकारण भेद से यह दो प्रकार कहे गये हैं।

चौथे दर्जे पर प्रीति की हालत का नाम प्रणय और सख्य है लक्षण ये हैं,

मन देहेन्द्रिय दोउ के एक मेक हो जांय।
सो विश्वासी प्रणय है सख्य मैत्री भाय॥

अर्थात् इस दर्जे मुहब्बत हो जाय कि मन और देह और इन्द्रियें दोनों की एकमेक होजावें जो ख़याल एक के दिल में पैदा हो वोही दूसरे के मन में आवे और जिस चीज़ को वो चाहे उसी को दूसरा चाहने लगे यानी आशिक़ माशूक दोनों एक चित्त होजावें एक देह दो प्राण जिसे कहते हैं उसका नाम प्रणय सख्य है।

इसके बाद पांचवा दर्जा राग है वो तीन प्रकार का है नील, कसूंबी, मंजिष्ठ, और उसके पीछे जब प्यारा पल पल में नया दीखने लगै उस का नाम अनुराग है, लक्षण दानों का यह है,,

ताके आगे राग है नील कसूंबी मँजिष्ठ।
पल पल प्यारो नयो लगै सो अनुराग अभीष्ट॥

इस के पीछे प्रेम की छटी दशा जो होती है उसका नाम रूढ महा भाव है जिसका यह लक्षण है।

प्रिय के सुख में एक पल पीड़ा सही न जाय।
महा भाव सो रूढ है जगत कष्ट दरसाय॥

अथात् अपने प्यारे के सुख में छिन भर भी कमी की बरदाश्त न हो और बिना प्यारे के सारा जगत कष्ट और दुख दाई होजाय इसका नाम रूढ महा भाव है।

इसके बाद प्रेम की सातवीं हालत का नाम अधिरूढ महाभाव है उसका यह लक्षण है।

प्रिय मिलनो सुख लेश में कोट जगत सुख नाहि।
कोट ब्रह्मांड को दुःख सो बिरह लेश भर नाहि॥

अर्थात् कोट ब्रह्मांड का सुख प्यारे से मिलने की बराबर नहीं और लेश मात्र विरह का दुख कोट ब्रह्मांड के सारे दुखों से ज्यादा व्यापे इसका नाम अधिरूढ महाभाव है।

इसके बाद आठवीं अवस्था प्रेम की मोदन और नवीं मादन है अर्थात् प्रेम समुद्र उमड़ता है तब सदा उसके मोद में मग्न रहैं और मादन अवस्था वह है कि प्रेम का नशा छाया हुआ रहे एक पल भी अन्तःकरण से नशा प्रेम का दूर न होय।

आखिरी हालत दसवीं जो प्रेम की है उसका नाम दिव्य उन्माद है और इसमें तद्रूपता होजाती है लक्षण श्री मती किशोरीजी ने यह कहा है कि

प्रियतम प्यारी भाव में, प्रिया प्रियहि आवेश।
कीट भृंगि की न्याय ज्यों, दोउ दोउ होय विशेश॥

ऊपर लिखी हुई प्रेम की दशायें ब्रज गोपिकाओं में बरतती थीं इसी कारण से प्रेम की ध्वजा कहलाईं और त्रलोकी नाथ जगदाधार परम पुरुष को उन्होंने केवल प्रेम के बल से अपने आधीन कर लियाथा।

(प्रेम लक्षणा भक्ति)

प्रेम लक्षणा भक्ति हजारों लाखों भक्तों में किसी को प्राप्त होती है इसका लक्षण यह लिखा है।

वाग्गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं हसत्यभीक्ष्णं रुदति क्वचिच्च।
विलज्ज उद्गायति नृत्यतेच मद्भक्ति युक्तो भुवनं पुनाति॥

श्री भगवान फ़रमाते हैं कि ऐसे लक्षण वाला मेरा भक्ति संसार को पवित्र करता है, सुन्दर दासजी ने इसी प्रेम लक्षण भक्ति का स्वरूप ऐसे कहा है।

प्रेम लग्यो परमेश्वर से तब भूल गयो सगरो घर बारा।
ज्यों उन्मत्त फिरै जित ही तित नैक रही न शरीर सँभारा॥
सांस उसास उठै सब रोम चलै दृग नीर अखंडित धारा।
सुन्दर कौन करै नवधाविध छाक पर्यो रस पी मतवारा॥

प्रेम अधीनो छाको डोलै, क्यूं को क्यूं ही वाणी वोलै ।
जैसे गोपी भूली देहा, तैसो चाहै जासूं नेहा ॥

कवहूं हंस नृत्य करै रोवन फिर लागै ।
कवहूं गद गद कंठ शब्द निकसै नहि आगे ॥
कवहुक हृदय उमङ्ग वहुत ऊंचे स्वर गावै ॥
कवहू होय मुख मौन गगन ऐसे रह जावै ॥
चित्त वित्त हरि सों लग्यो सावधान कैसे रहे
यह प्रेम लक्षणा भक्ति है शिष्य सुनो सत गुरु कहै ।

चरणदासजी महाराज फ़रमाते हैं,

हृदय मांही प्रेम जो , नैनों झलकै आय ।
सोहि छकाहरिरसपगा , वा पग परसौं धाय ॥
गद गद वानी कंठ सों , आंसू टपकैं नैन ।
वोतो विरहन रामकी , तलपत है दिन रैन ॥
हाय २ हरि कव मिलै , छाती फाटी जाय ।
ऐसो दिन कव होयगो , दर्शन करूं अघाय ॥
विन दर्शन कल ना पडे, मनवा धरै न धीर ।
चरणदासकीश्यामविन , कौन मिटावै पीर ॥

दादूजी महाराज फ़रमाते हैं ।

पीव पुकारै विरहनी , निस दिन रहै उदास ।
राम राम दादू कहै , ताला वेली प्यास ॥
विरहिन दुख कासूं कहै, कासूं कहै संदेस ।
पंथ निहारत पीव को , विरहन पलटै केस ॥

बिरहन रोवै रात दिन, झुरवै मन ही मांहि ।
दादू औसर चल गया, प्रीतम पाये नाहिं ॥
ज्यों चातक चित जल बसै, ज्यों पानी बिन मीन ।
जैसे चन्द्र चकोर त्यों, दादू हरि सों लीन ॥

इस दरजे का इश्क़ जिन भक्तों को हुआ है उन सब में गोपिकाओं का नम्बर सब से आला है; इसी वास्ते महात्मा शांडिल्य मुनि ने भक्ति सूत्र में गोपिकाओं का उदाहरण दिया है और महात्माओं ने गोपी प्रेम की ध्वजा ऐसा कहा है और ऊधो जैसे ज्ञानी पण्डित इन गोपिकाओं का सच्चा प्रेम देखकर सब ज्ञान ध्यान पण्डिताई को भूल कर ब्रज गोपियों के चरणों की रज में लोटने लगे और कहने लगे कि परमात्मा मुझे वृन्दावन में इन गोपिकाओं के चरणों की रज में लता पता वृक्ष आदि का जन्म देवै इत्यादि. आहा प्रेम दशा गोपिकाओं की किससे वर्णन की जासकती है कुछ इन कवित्तों से जान लीजिये ।

(कवित्त) घर तजौं, बन तजौं, नागर नगर तजौं, बंशी बट वास तजौं, काहू तैं न लजिहों । देह तजौं, गेह तजौं, नेह कहौ, कैसे तजौं, आज काज राज बीच ऐसे साज सजि हों ॥ बावरो भयो है लोक, बावरी कहत मोकों, बावरी कहे तैं मैं काहू न बरजि हौं । कहैया सुनैया तजौं, बाप और भैया तजौं, दैया तजौं, मैया पै कन्हैया नाहि तजिहों ॥

(तथा) गले तौक़ पहिराओ, पांव बेरी ले भराओ । गाढे बंधन बँधाओ, औ खिचाओ काची खाल सौं ॥ विष लै पिवाओ, तापै मूठ भी चलाओ, मांझी धार में बहाओ, बांध पत्थर कमाल सों । बिच्छू ले बिछाओ, तापै मोहि लै सुलाओ, फेर आग भी लगाओ, बांध कापर दुशालसों ॥ गिरिसै गिराओ,

काली नाग से डसाओ, हा हा प्रीत ना छुडाओ गिरधारी नँदलाल सों ॥

वृन्दावन निवासी श्री नारायण स्वामीजी ने अनुराग रस के दोहे कहे हैं उनमें से कुछ यहां लिखे जावें हैं।

दोहा—लगन लगी गोपाल की, भूली तन की सार।
नारायण मछरी भयो, श्याम रूप जलधार ॥ १
प्रेम सहित अंसुवन भरे, धरे युगल को ध्यान।
नारायण ता भक्त को, जग में दुर्लभ जान ॥ २
नारायण या प्रेम को, नद उमड़त जा ठौर।
पल में लाज मर्याद के, तट काटत है दौर ॥ ३
जिनें प्रेम प्यालो पियो, झूमत तिनके नैन।
नारायण वा रूप मद, छके रहैं दिन रैन ॥ ४
नारायण या प्रेम सुख, मुख सों कह्यो न जाय।
ज्यों गूंगो गुड खात है, सैनन स्वाद लखाय ॥ ५
रूप छके झूमत रहैं, तन को तनक न ज्ञान।
नारायण दृग जल भरे, यही प्रेम पहिचान ॥ ६
मन में लागी चटपटी, कब निरखूं घनश्याम।
नारायण भूल्यो सबही, खान पान विश्राम ॥ ७
देह गेह की सुध नहीं, टूट गई जग प्रीत।
नारायण गावत फिरे, प्रेम भरे रस गीत ॥ ८

इत्यादि

ऐसे प्रेमी भक्तों की महिमा कहां तक कही जावे खुद भगवान् फरमाते हैं, कि

नसाधयति मां योगोन सांख्यं धर्म उद्धव।

नस्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्ति र्ममोर्जिता ॥
अहं भक्त पराधीनो ह्य स्वतन्त्र इव द्विजा ।
साधुभिर्ग्रस्त हृदयो भक्तै र्भक्तजनप्रियः ॥
नाहमात्मानमाशासे मद्भक्तैः साधुभिर्बिना ।
श्रियं चात्यन्तिकीं ब्रह्मन्येषांगाति रहं परम ॥
यदि वातादि दोषेण मद्भक्तो मांच बिस्मरेत् ।
तर्हि स्मराम्यहं भक्त सयाति परमां गतिम् ॥
मद भक्ता यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छामि पार्थिव ।
भक्तानामनु गच्छान्ति मुक्तयः श्रुतिभिः सह ॥

इन श्लोकों का अर्थ यह है (भगवान फ़रमाते हैं) कि योग और ज्ञान और धर्म और वेद का पढ़ना और तप और त्याग इन साधनों में से कोई भी मुझे बस में नहीं कर सकता जैसा कि मेरी भक्ति मुझे बसमें कर लेती है, मैं भक्तों के आधीन हूं साधु भक्त मेरे दिल में काबू पाये हुए हैं, मैं अपनी आत्मा और खास मेरी लक्ष्मी से भी अधिक भक्तों का भरोसा करता हूं,, यदि अंत समय में मेरा भक्त वायूकफ़ आदि दोषों के बढ़ जाने से मुझे भूल भी जावे तो मैं उसकी संभाल कर लेता हूं, जहां मेरे भक्तजाते हैं वहीं मैं उनके पीछे पीछे जाता हूं और सारी श्रुतियां और ऋद्धि सिद्धि भक्तों के पीछे पीछे फिरती हैं।

एक महात्मा ने भक्तों की महिमा इस प्रकार कही है।

भक्तों की पदवी बड़ी इन्द्रहु से अधिकाय ।
तीन लोक के सुख तजे लीने हरि अपनाय ॥
प्रभु अपने मुखसे कही साधू मेरी देह ।
उनके चरनन की मुझे प्यारी लागे खेह ॥
आठ सिद्ध दूं लें नहीं कनक कामिनी नाहि ।
मेरे सँग लागे रहे कवहुन छोडें बांहि ॥

प्रेमी को रिनिया रहूं यही हमारो सूल ।
चार मुक्ति दई ब्याज में दे न सकूं अब मूल ।
मेरे जन मोमें रहैं मैं भक्तों के मांहि ।
मेरे अरु मम भक्त के कछु भी अन्तर नाहि ॥
भक्त हमारे पग धरैं जहां धरूं मैं हाथ ।
लारे लाग्यो ही फिरूं कबहुन छोड़ूं साथ ॥
इत्यादि

अब प्रेम की महिमा आप लोगों को विदित हुई उसी प्रेम के हृदय में पैदा करने और बढ़ाने वाले ८४ पद इस पुस्तक में हैं, जब प्रेम से इन पदों का गाना और सुनना हो तो प्रेम रूपी प्रभाकर (सूर्य) उदय होकर मनुष्य के किरोड़ों जन्म के पापों का अन्धकार नष्ट कर देगा और ८४ लाख योनि के चक्र में पड़ना कदापि न होगा आशा है कि सज्जन विद्वान लोग मुझ मंद मति की टूटी फूटी बानी के दोषों पर दृष्टि न देकर सार वस्तू प्रेम को ग्रहण करेंगे ॥

सूचीपत्र

४३ मोहन जात निपट छल
४४ मुझे इक पलक में छलक
४५ मेरा महबूब जानां क्यों.
४६ मज़ा देरही है जुदाई तुम्हारी
४७ महलक़ा परदे में छिप २ के.
४८ महबूब मेरा मोहन हरजा.
४९ मुहब्बत में सदमे सहे कैसे २.
५० मुरारी ज़रा छब दिखा प्यारी
५१ मेरे दिलको घायल किया.
५२ हरि रंग राती प्रेमकी माती.
५३ गिरवर धर मोहन सखि.
५४ दरस बिन अँखियां बरस.
५५ मानौ २ श्याम निठुरताई.
५६ बंसीवारो जसोधा जु को.
५७ जी हमें उस सनम का.
५८ नई लागी लगनिया मगनिया
५९ श्रीहरि प्रेम पिला रस प्याला
६० प्रेम भगवत का नहीं जिसमें.
६१ नैना थांही सु लाग्या निभा.
६२ छबीला म्हारो मन हर लीनो.
६३ मन मोहन के गुण सुन सखी.
६४ कहां लग कहूं प्रेम कठिनाई.
६५ कोजानैं सखि जो गति मोरी.
६६ कैसे जताऊं बताऊं जताऊं.
६७ करो कोई कोट जतन हो तौ.
६८ सखि कहि न जात कछु मन.
६९ मुझे निज प्राण तन मनसे.
७० बन्योरी मेरो वैरी बिधिना.
७१ कठिन प्रेम सम्वाद सखी.
७२ प्रीत रीत प्रिया प्रीतम जानैं
७३ जिधर देखी उधर पाई झलक
७४ जिसने मन मोहन पिया को.
७५ अपना जलवा हर जगह.
७६ दिखलाते हो अदायें बिहारी.
७७ तुमतो सांवरिया गोपाल हौ.
७८ हर गुलमें रंग हरका जलवा.
७९ इस असार संसार मांहि हरि
८० देखा अनोखा माजरा नंद.
८१ जाओजी जाओ वहीं रात.
८२ रेछैल छबीले मोहन-हो छैल.
८३ बन बन राजे श्रीब्रजराज.
८४ श्याम रंग राती एक जोबन.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

प्रेम अभिलाषा
तथा
उत्कंठा दशा
के पद

(नाटक की चाल में पद)

(१) श्रीबन्माली दृष्टि निराली मुझपर डाली हूं बेचैन ।
तरजूं लरजूं मनकौ बरजूं मुख सै निकसै ना
कुछ बैन ॥ श्रीबन्माली० ॥

(अं०) सांवला वो रंग । अंग क्या अनंग । प्रीत पुंजलाल ।
रम्यदृग विशाल । मंद मंद हास । डारी प्रेम फांस ।
कैसे पाऊं कितको जाऊं कुछ भी भावै ना दिन रैन ।
श्रीबन्माली० ॥ १ ॥

सुनिये नंदलाल । संग ग्वाल बाल । मेरे घरमें आ ।
मुखड़ा दे दिखा । वंसी को बजा । दे मुझे मजा ।
मथुरा बासी मतकर हांसी थोथी हरगिज़ मार न सैन ।
श्रीबन्माली० ॥ २ ॥

(ग़ज़ल) राग देश

(२) नन्दलाल तेरे विसाल की मुझे आरज़ू है सता रही ।

तसवीर हुस्नो जमालकी है नज़र में जबसे के आरही ॥ १
वोअजीब मोर मुकट की छब कि लटकपै जिसके फ़िदा हैं सब।
है जिबीं पै केसरिया तिलक नई शान जिसकी लुभारही ॥२
अबरू कमान को तानके किया क़त्ल नैनों के बान से।
सियह ज़ुल्फ़ की उलझान में अन जान जान समारही ॥ ३
क्या सुडोल गोल कपोल हैं प्यारी नासिका हु अमोल है।
न लबों की सुर्खी का तोल है कि कंदूरी जिससे लजा रही॥४
वो जड़ाऊ कुण्डल कान में नहीं मिस्ल जिनको जहान में।
है दमक कहां शशिभान में जो यहां है जलवा दिखा रही ॥५
करूं दन्त रेख का लेख गर रहे मोतियों की किधर क़दर।
मुसकान मंद है बेशतर मानो चांदनी सी खिला रही ॥६
गया जबकि चाहे ज़नख़ में दिल हुआ बेख़बर वो सका न हिल।
गरदन की ख़ूबी से आंख मिल है तड़प का लुत्फ़ बतारही॥७
वो सजीला सुन्दर श्याम तन कि निसार जिसपै हुवा मदन।
चटकीला पीला वो पैरहन मानों बर्क़ अब्र में छारही ॥ ८
कर कमल रससे भरी हुई अनुपम जराव जरी हुई।
है वो बंसी अधर धरी हुई अनुराग राग बजा रही ॥ ९
बनमाल सीने पै यार के मन हरत हार बहार के।
है अनेक भूषण भार से पतली कमर बल खा रही ॥१०
गई जब कि पैरोंपै तेजतर ये नज़र तो ख़ूबी को देखकर।
वहां नूपुरों की अवाज़ पर हो निसार ग़म को भुलारही ॥११
मथुरेश चन्द्र नखों में जी जो गया तो प्रेम सुधा को पी।
वो हुआ सुखी येबड़ी ख़ुशी की सदा है कानों में आरही ॥१२

(राग गिरनारी सोरठ)

(इक चतुर नार कर कर सिंगार) इसके वजन पर।

(३) मन चपल बीर छिन छिन अधीर नहीं जानत पीर
बलदाऊ को बीर। मेरे हिये में तीर तक मार्‍यो
गिरधारी ॥ १ ॥
गई भरन नीर जमुना के तीर मेरो गह्यो चीर कांपत शरीर।
मथुरेश पिया की छबि टरत नटारी ॥ मन चपल० ॥ २ ॥

(राग भैरों ताल चौताला)

(४) लागी है नैन लगन कृपा कीजे मोपै मोहन सांवरे
मोमन भयो नयो नेह ॥ लागी है० ॥
प्रात लखेजात श्याम गौअन बिच सोभाधाम, मंद
हंसी वाकी फन्द डार्‍यो ॥ लागी है० ॥
मथुरा पति कृष्ण नाम ध्यावत, हो श्यामा श्याम
काम तजे सार प्रेम धार्‍यो ॥ लागी है० ॥

(राग काफी)

(सांवरो नजाने मोरी पीर अरी मैं जात गई अरर ररर ररर)
इसके वजन पर।

(५) मोहना चलायो नैना तीर, हिये में साल रह्यो,
अरर ररर अरर ररर ॥ मोहना० ॥

मैं पीताम्बर पकरन धाई, है छली वो छैला बलबीर ।
वहीं से भाज गयो सरर ररर सरर ररर ॥ मोहना० ॥
हौं बन व्याकुल अति घबरानी, जियरा धरत नाहि धीर ।
नैनों से नीर झरै झरर ररर झरर ररर ॥ मोहना० ॥
रे मथुरेश हूं डरत अकेली, नाजुक नारि सरीर ।
अजी यह कांप रह्यो थरर ररर थरर ररर ॥ मोहना० ॥

(परदेसी सैयां नैना लगाय दुख दे गयो, इसके वज़न पर)

(६) अति कामन गारो नंद दुलारो मन भावनो ।
अरे हां रे मन भावनो० ॥
१—वा बिन खान पान विष लागै । घर वर कछु न सुहाय
सुहाय वन जावनो ॥ अति० ॥
२—पल पल विकल दरस को तरसूं । ला सखि पीव बुलाय
सुनाय शुभ आवनो ॥ अति० ॥
३—अंखियां मूंदे ठारोसो दीखै । खोले नाहिं लखाय ।
रहजाय पछतावनो ॥ अति० ॥
४—प्रेम विवस मथुरेश कहावें । दूजो नाहि उपाय
बसाय गुण गावनो ॥ अति० ॥

(नाटक की लयपर)

(७) घनश्याम, घनश्याम, घनश्याम, घनश्याम निरख
नेचल सखी गोकुल व्याकुल है जिया मोरा ॥ घनश्याम० ॥
है बिरह का संकट घोरा । दुख पावत हूं नहिं थोरा ॥

मनना समझै अति भोरा । ज्यों बिन्दु चातकहि प्यारा ॥
जल हीन ज्यों मीन बिचारा । त्यों श्याम है प्राण अधारा ॥
टुक दरस का एक सहारा । भाषत मथुरादास घनश्याम
श्याम अबतो ध्यान लगा मोय तोरा ॥ घनश्याम० ॥

(हाथ जोर तोरे चरन परी । इसके वज़न पर)

(८) ऐसी कहा मोसे चूक भई । आये न हर रैन गई ॥
१—मधुर बचन प्यारी हांसी, डारी मोरे नेह की फांसी ।
जानुं नहीं मैं कछु चतुरई, आये न हर रैन गई ॥
२—जो पिया आके देवै दरस, लूंगी मनाय पैयां परस ।
सेवा करूंगी नई नई, आये न हर रैन गई ॥
३—कहियो सखी मथुरेश से जाके, प्राण राखौ बेगहिं आके ।
नातो कहाओगे जी निरदई, आये न हर रैन गई ॥

॥ ग़ज़ल ॥

(९) जिसकी नज़र में ख़ुशतन मोहन समा रहा है ।
छिन भी उसे दरस बिन बरसों सा जा रहा है ॥
बे चैनी बे क़रारी गिरिया व आहो ज़ारी ।
हरदम हैं अश्क जारी यूं दिन बिता रहा है ॥
चिन्तन करें मनों में पावैं वो दर्शनों में ।
ब्रजके सघन बनों में गउएं चरा रहा है ॥
कुर्बां किया चरन पर तन मनको दास बनकर ।
पाया अमन जमन पर हरि मुस्करा रहा है ॥

तदबीर सब अबस है मथुरेश प्रेम बस है।
जिस दिल में पुर ये रस है वो हर को भारहा है ॥

॥ ग़ज़ल ॥

(१०) मुझको भाता है चपल छैल वो नंद का छौना।
जिसके दर्शन के बिना उम्र है नाहक खोना ॥
वेदने भेद चरित्रों का न जिसके पाया।
इन्द्र हैरान हुआ ब्रह्मा निरख पछताया ॥
सातवीं साल रखा उंगली पै गोवरधन को।
नाग जमुना से निकाला दिया सुख हरजनको ॥
इश्क़ के फ़न में हुई गोपियां बढ़ की शातिर।
चोर माखन का कहाया वो उन्हीं की ख़ातिर ॥
रास लीला से किया कामके मदका मर्दन।
काज भक्तों का किया प्रेम का मारग रोशन ॥
योग जप तप से वो क़ाबू में नहीं आता है।
प्रेम की डोर में हर आप ही बँध जाता है ॥
कंस पापी को फ़ना करके मिटाया दुख लेश।
तार मथुरा को दिया धन्य रँगीले मथुरेश ॥

॥ ठुमरी नाटक की ॥

(वाकी खबरिया न पाई मोरी गुइयां। इसके वज़न पर)

(११) तोरी नज़रिया सताई मोहिं सैयां ॥

मैं ध्याऊं रिझाऊं मनाऊं तोहि श्याम श्याम ।
दुःख टाला लीनी माला तेरो ध्यान ।
नेह जाला तन पै डाला मेहरबान ।
तारण तरण पातक हरण मथुरा शरण तेरी ।
बलिहार मैं बलिहार हूं बलिहार मैं तोपैकान ।
तोरी नजरिया सताई मोहिं सैयां ॥

(गजल सोरठ वा देश में गाने की)

(१२) ज़रा छब दिखाके वोजादूगर है नज़र में मेरी समागया ।
नये ढबकी भंग पिला गया नया रंग ढंग जमा गया ॥
करूं इन्तजार में कबतलक इक छिनभी लगता नहीं पलक ।
मुझे श्याम रूप की वो झलक दिखलाके दिलको लुभागया ॥
कोई कहता कृष्ण है बेवफ़ा कोई कहता तुझसे वो है ख़फ़ा ।
अजमाया तो यह मिला नफ़ा कि वो दिल दुखाके चलागया ॥
चाहे सैकड़ों ही करें सितम बखुशी हमेशा सहेंगे हम ।
कभी ग़म न खायेंगे एकदम ये भरोसा जीमें है आगया ॥
मथुरेश अबतो दया करो ज़रा मेरा भी तो कहा करो ।
मेरे दिल में यार रहा करो यही वस्ल दिलको है भागया ॥

(नाटक की लय)

(बांके सांवरिया कन्हैया मोको तारनारे । इसके वज़न पर)

(१३) मोरे आंगनवा गोविन्दा प्यारे आयजारे ॥
बांकी लटक पर अटक रह्योरे मन । छबि अनूप सोहनि

तोरि चितवन ॥ मोहन मदन लजावन छन मुसिकायजा रे ॥
मेरे आंगनवा गोबिन्दा० ॥

जान असार, ये संसार, तुझसे प्यार, कीनो यार, बारंबार, हूं बलिहार । सगरा, झगरा, मथुरा, हिये का मिटाय जारे ।
मोरे आंगनवा गोबिन्दा० ॥

(ग़ज़ल)

श्रीरघुनन्दन महाराज की विरह में

श्रीजानकी जी महारानी की उक्ति ।

(१४) दिखादो अपनी छब अबतौ अहो रघुबीर थोड़ीसी ।
हूं आफ़त में करौ जलदी अजी रणधीर थोड़ीसी ॥
छुडाया ग्राह से हस्ती है अब हिम्मत में क्यों पस्ती ।
असुर रावण की क्या हस्ती करौ तदबीर थोड़ीसी ॥
कलेजा जमका हिल जावै वो गिल में काल मिल जावै ।
जो देखै म्यान से निकली तेरी शमशीर थोड़ीसी ॥
सदा चरणों में लिपटानी धरी सिर नाथ की बानी ।
लखन की सीख नामानी भई तकसीर थोड़ीसी ॥
समझ कर अपनी निजदासी न काटोगे जो दुख फांसी ।
न होगी क्या तेरी हांसी दया के बीर थोड़ीसी ॥
कहै मथुरा बचन ये सुन सियाजी के पवन सुत ने ।
सुनाकर आगमन हरका मिटादी पीर थोड़ीसी ॥

[पद]

(कन्थ बिन कैसे जीवूंरे । इसके वज़न पर)

(१५) दृगन बस्यो घनश्याम धाम धन काहि सुहावैरे ॥

१—वय किशोर चित चोर छबि अतुलित जोवन जोर ।
मोर पक्ष धारी करैं मोरि पक्ष चहुं ओर ॥ धाम० ॥

२—मोर मुकट की लटक पर अटक रह्यो यह जीव ।
वाँह झटक इत में पटक गयो सटक कित पीव ॥ धाम० ॥

३—हौं मलीन अति दीन जन कृष्ण चरण-लवलीन ।
छीन काय वन २ फिरूं जीवन उन आधीनँ ॥ धाम० ॥

४—चितवन हैं कामन भरी मोहन मन बस कीन ।
तपन बढी तन है विकल जलबिहीन जिम मीन ॥ धाम० ॥

५—पाय सकूं कित जाय अब दिव्य काय मथुरेश ।
हाय २ धुनि धाय सुन वेग निवारौ क्लेश ॥ धाम० ॥

॥ नाटक की चीज़ पद ॥

(मैं चंचल आफ़त हूं फ़ितना बड़ा दाना बड़ा स्याना)
(इसके वज़न पर)

(१६) मैं सुन्दर माधव से बिछुरी हुई हैरां बड़ी नादां ॥
मैं भोरी भारी हूं निठुरी, स्वामी तो मेरे हामी हैं बड़े
नामी हैं सुख धामी हैं । वाह वाहजी अन्तर जामी हैं ॥
वो प्यारे मेरे रखवारे मेरे न बिसारैंगे ॥

सुन्दर लोचन संकट मोचन मथुरा दासी दर्शन प्यासी।
वाह वाह वाह ॥ मैं सुन्दर० ॥

॥ नाटक की चीज़ ॥

(दिल जान करूं कुरबान सुरतिया मन बस गई)
(इसके वज़न पर)

(१७) बलबीर निगाह का तीर हियेतैं निकसत नहीं भारी पीर।
हियेतैं निकसत नहीं० ॥
तोरे बल बल जाऊं अपनाऊं सिर नाऊं।
देख इधर पिय धीर बीर ॥ बलबीर ॥
जंच गया सांवरे आंखों में ये जोबन तेरा।
छोड़ सकती नहिं दासी कभी दामन तेरा ॥
चल गया हम पै सनम सांवरे कामन तेरा।
धन्य धन आज घड़ी पाया जो दर्शन तेरा ॥
दूर मत कर दिलबर दिलसे। रहो दिन रैन हिल मिलके।
मथुरा नमत, पैयां परत, सैयां तुरत, बैयां गहत,।
हो बलबीर० ॥

(प्रीत कान्हा से करि पछताय रहीरे। इसके वज़न पर)

(१८) कृष्ण मिलने को दिल ललचाय रह्योरे ॥
१—बांकी दिलदार की वो झांकी मनको भाती है।
तेज़ तर उसकी निगाह तीरसे चलाती है।
यादे चंचल में मुझे पल भी कल न आती है।

जान जाती नहीं कैसी कठिन ये छाती है।
अचंबो भारी हिये में हमारे छाय रह्योरे ॥ कृष्ण० ॥
२—सुना है ब्रज में मोहन बिहार करते हैं।
वो प्रेमियों को सदा दिलसे प्यार करते हैं।
चरन पै उनके जो तन मन निसार करते हैं।
वो उनके मिलने का ख़ुद इन्तज़ार करते हैं।
मुझी को हाय दई कैसे वो बिसराय रह्योरे ॥ कृष्ण० ॥
३—विरह की आग ने दिल में लगाया डेरा है।
प्रान पंछी का यहां थोड़ा ही बसेरा है।
रात ग़फ़लत में गई हो चला सवेरा है।
नाथ सुध लीजै फ़क़त आसरा ही तेरा है।
तेरे गुन देर से मथुरेश हूं मैं गाय रह्योरे ॥ कृष्ण० ॥

॥ पद ॥

(परदेसी सैयां नेहा लगाय दुख देगयो)

(इसके वज़न पर)

(१९) रंग भीनों कान्हा मन हर लीनों भई बावरी ॥
हेरत फिरूं गिरूं धरणी पर। हरि हरि करूं पुकार दीदार-
दिखलावरी ॥ रंग भीनों० ॥
तीखों नैन बान हिये सालत व्याकुल जिया अकुलाय उपाय
बतलावरी ॥ रंग भीनों० ॥
सुनहु सयानी राधे रानी रस बस तुम्हरे गुमानी मनाय-

इत लावरी ॥ रंग भीनों० ॥

हौं गुण हीन दीन दुखियारी । अतिही कठिन मलीन कृपातैं
अपनावरी ॥ रंग भीनों० ॥

देश कहै मथुरेश दयालू प्रभू को विरद लजाय जताय
समुझावरी ॥ रंग भीनों० ॥

(सोरठ)

(सखी लागी सोई जाने मोहन मुसिकाने)

इसके वज़न पर ।

(२०) लईना सुध मेरी अरी एरी सखी जिया कैसे रहैरी ।
एक दिना गई पन घट जमुना पनियां भरन सवेरी ।
लखमन हरन अदा मोहन की परी नेह की वेरी ।
नैन दोउ वहिं अटकेरी ॥ १ ॥
धरी रही जल भरी गगरिया भई नई हत फेरी ।
चोरी कर सटके नट नागर प्राण न संग गयेरी ।
अज हुं पछतात घनेरी ॥ २ ॥
वह सज धज वह गज़बकी चितवन लखको नाहि मरैरी ।
धिक उन विन मेरे जीवन पर सौंहैं खात हों तेरी ।
सखी जिये नाहिं सरैरी ॥ ३ ॥
प्रीत रीत मथुरेशहि जानत ऐसे वचन सुनेरी ।
कर परतीत प्राण यह पापी या तन मांहि टिकेरी ।
वेग कहियो हरसेरी ॥ ४ ॥

[नाटक की चाल में पद]

(दायम फ़ज़ल तेरा करीम, इसके वजन पर)

(२१) सुन्दर बदन माधौ मुकुन्द प्यारे कहां मैं तेरी सुध पाऊं।
हे कृपाल गिरिधर हूं बलिहार तुमपै शरण तेरी हे मुकुन्द।
हे कान्ह हे कान्ह मिलौ आनके। जीवन मेरा है तुम अधीन।
लीजै जस, दीजै रस, हूं दुखारी इन्तिज़ारी में।
राधावर वंसीधर श्रीमुकुन्द ॥ सुन्दर० ॥
उर ध्यान गोपाला का मथुरा आशिक़ लाला का धन्य भाग
व्रजबाला का। दे दर्शन गिरिधर ॥ सुन्दर० ॥

(भजन)

(सांवरियो सितमगर जादू डार गयोरी इसके वज़न पर)

(२२) मोहन के दरस बिन जिये सार नहींरी ॥ मोहन० ॥
जीनो बृथा ही खानो पीनो बृथा ही।
दुनिया निगोरी से प्यार नहीं री ॥ मोहन० ॥
बन बन मैं डोलूं काहु जन से न बोलूं।
मोहि तनके राखन् से सरोकार नहींरी ॥ मोहन० ॥
झांकी मनोहर दिखा प्यारे दिलवर।
ऐसे रटे हु पाऊं यार नहीं री ॥ मोहन० ॥
तिरछी नज़रिया से घायल बना के।
सुनता सितंगर पुकार नहीं री ॥ मोहन० ॥

एरी हुई हुं मथुरेश की चेरी ।
उसके सिवा तो दिलदार नहीं री ॥ मोहन० ॥

(पद)

(अटारयों में गिरोरी कबूतर आधी रात, इसके वज़न पर)

(२३) विचारियौ जी बिरहा में क्योंकर बीते रात ।
सुन ऊधौ ज्ञानी पीर बखानी नहिं जात ।
निठुराई ठानी हरिने विचारी भारी घात ॥ बिचा० ॥
वोह दीन दुखारी छांडी जसोधा सी मात ।
है अचरज भारी श्याम न तनक लजात ॥ विचा० ॥
नटवर रंगभीनो मनहर लीनो मुसिकात ।
अस टोना कीनो वा बिन कछु न सुहात ॥ विचा० ॥
चरणन की चेरी दुखित घनेरी अकुलात ।
नहि कीजे देरी श्याम मिलादो हाहा खात ॥ बिचा० ॥
यह बिनती मोरी हरिकौ सुनैयो जोरूं हाथ ।
भई कुवजा गोरी जोरी यह कैसो संग साथ ॥ बिचा० ॥
मन कौ नहि भावे ऊधो जोग की रे बात ।
मथुरा पति आवें दरस दिखावें किस भांत ॥ विचा० ॥

(दादरा)

(कन्हैया न दूटे हमार बे दरदी हो बालमा, इसके वज़न पर)

(२४) बल भैयाने मारी कटार दरद की मारी मरूं ॥

नशे में चूरथा जोबन के बनसे आती वार ।
नज़र कटारी का उसने कियारी मुझ पर वार ।
अरी हुई मेरे कलेजे में पार ॥ दरद की मारी० ॥ १ ॥
चलाया मन्द हंसन का भी दूसरा हतियार ।
सँभल सकी नहीं वे सुध हुई मैं अबला नार ।
अरी गया मन को चुरा के सिधार ॥ दरद की मारी० ॥ २ ॥
उसी के खोज में फिरती हूं छोड कर घरबार ।
पकड़ जो लावे उसे दूं इनाम रत्न हज़ार ।
अरी मैं तो मथुरा में करिहों पुकार ॥ दरद की मारी० ॥ ३ ॥

(मांड)

(परदेसी ढोलारे आन तो जगाईरे बैरिन नींद में, इसके वज़न पर)

(२५) अलबेले रसियारे प्रीत क्यों लगाई रे दुखडा देनको ॥
अरे भारी फंद में फंसाई छलियारे, ।
कीनी चतुराई मन के लेनको ॥
(दोहा) नीके यह नहचो भयो, दुःख मूल है प्रीत ।
करि हैं कबहुन भूल कै, कारे की परतीत ।
अरे काहे अखियां मिलाई रसियारे, ।
दीनी है दुहाई सारे सुख चैन कौ ॥ अल बेले० ॥
(दोहा) एक दिना हमरे बिना, घरि पल रह्यो न चैन ।
ऐसे हरि निठुरे भये, अब बीती बहु रैन ॥
अरे काहे ऐसी निठुराई ठानीरे, ।

कैसे हम काटैं वैरिन रैन कौ ॥ अल बेले० ॥

(दोहा) पीर बढी बलबीर बिन, धीर बँधावै कौन ।
मथुरा पति या बिपति कौ, मेटहु आके भौन ॥
अरे तोरी होयगी बडाई जसियारे, ।
बोलि है कन्हाई सांचो बैन कौ ॥ अल बेले० ॥

(ख़्वाजा लीजे खबरियां हमारीरे, इसके वज़न पर)

(२६) कोई मोहन पिया से मिलाय दोरे ॥
जिसकी तलब का दर्द मुझे वाल वाल में ।
बे चैन कर रहा है न कल काहु काल में ।
बद मस्त है भटकते उसी के ख़याल में ।
दिल फँसरहाहै श्याम की जुलफ़ोंके जाल में ।
मेरे प्यारे का मुखडा दिखाय दोरे ॥ कोई० ॥
क्या क्या सितम दिखाये जुदाई में यारने ।
कैसे मज़े चखाये हमैं इन्तिज़ार ने ।
क्या गुल खिलाये इश्क़ चमन की बहारने ।
सब हौंसले मिटाये दिल बे क़रार ने ।
यही पीतम को दुखडा सुनाय दोरे ॥ कोई० ॥
आंखों में है न नींद न कुछ भूक प्यास है ।
ये जीव प्यारे पीव दरस बिन उदास है ।
दुख पाती तन से जाती नहीं क्यों ये सांस है ।
दम दम सनमके जल्दही मिलने की आसहै ।
जल्दी मथुरा पती कौ बुलाय दोरे ॥ कोई० ॥

(२७) पीर बेगानी पहिचानी नहीं हरि प्रीत की रीतहु जानी नहीं ॥ पीर० ॥

प्रेम लता कैसे सींचत हैं, कैसे ध्यान में लोचन मींचत हैं, ।
दिन कैसे वियोग के बीतत हैं, कहा जाने विपत्त जो नाहि सही ।
पीर बेगानी पहिचा० ॥

अहो मोहन मोहनी डार गयो, मोहि मार गयो तन जार गयो, ।
कर कौल करार बिसार गयो, अप कीरत है जग छाय रही ।
पीर बेगानी पहिचा० ॥

चित चोर से जाय जताय कहो, ललचाय हमैं सुख पाय रहो, ।
पर चित्त विना कैसे काया रहै, प्यारे देहु बताय उपाय यही ।
पीर बेगानी पहिचा० ॥

सूनो लगे ब्रज सारो हमैं, बिन श्याम के दूजो न प्यारो हमें, ।
मथुरेश पिया अब तारो हमैं, बिरहा जल में हम जात बही ।
पीर बेगानी पहिचा० ॥

॥ गरबी ॥ गुजराती चाल

(मधुर बांसुरी बजै छे घनश्यामनी जो, इसके वजन पर)

(२८) सुरत सांवरी ने मोही ब्रज कामिनी हो ।
मुरत माधुरी पै तुरत रीझी है भामिनी हो ॥ सुरत० ॥
भरन नीर चाली जमुना पै गज गामिनी हो ।
झलक श्याम की लगी है मानौ दामिनी हो ॥ सुरत० ॥
फिरत बावरीसी बैरिन होगई यामिनी हो

मथुरा प्रेम रंगी हरि छब धामिनी हो ॥ सुरत० ॥

॥ ग़ज़ल ॥

(२९) अदा घनश्याम प्यारे की नज़र में जब से आई है ।
दिले बिस्मिल में मत पूछो अजब वहशत समाई है ॥
न दिन को चैन है इकदम न रातों नींद आंखों में ।
दिलाई प्रेम के भूपाल नै अपनी दुहाई है ॥
अजब ही सोहनी सूरत ग़ज़ब वो मोहनी मूरत ।
न जाने किस महूरत में ये जादू से बनाई है ॥
यही है सार वेदों का मिटावन हार खेदों का ।
नहीं पार इसके भेदों का थकी सारी ख़ुदाई है ॥
जो सत चिदघन निरञ्जन है जनों का दुःख भंजन है ।
वोही मथुरेश मन रंजन किशोरी बर कन्हाई है ॥

[पद कसूंबी की लय में]

(३०) देख्यो मैं चाहूं, मैं चाहूं, मैं चाहूं, नंदलाला ।
मैं चाहूं नंदलाला । शंभू पूरो मेरी आस ॥दे०॥
(अंतरा) महिमा बखानी २, सो नीके हम जानी, ।
बाढी हिये अति प्यास ॥ देख्यो० ॥ १ ॥
ब्रज में वो कीनी, वो कीनी, रस लीला वो कीनी,-
देख्यो चाहूं वाको रास देख्यो० ॥ २ ॥
वाकी जो झांकी, जो झांकी, हिये में हर राखी,।

सो है अति सुख रास ॥ देख्यो० ॥ ३ ॥
मोहना सलौना, सलौना नंद छौना, ।
बलिहारी मथुरादास ॥ देख्यो० ॥ ४ ॥

॥ ठुमरी ॥

(छब दिखलाजा बांके सांवरिया ध्यान लगो मोय तोरारे)
(इसके वज़न पर)

(३१) तपन बुझाजा हिये की मोहनवा जान लग्यो जिया-
मोरारे ॥ जान० ॥
सीतल पवन चन्द्र उजियारी, लागत मोहि न प्यारी मुरारी ।
प्यास बढ़ी तुमरे दर्शन की, हारयो करत निहोरारे ॥
हो तपन० ॥
तिरछी चितवन मन हर लीनो, श्यामल तन रंगभीनो नवीनो ।
सेवक हूं उनही चरणन को, सब से नाता तोरारे ।
हो तपन० ॥
मीठी बतियन मन ललचानो, देह गेह की सुरत भूलानो ।
तुमही पर मथुरेश लुभानो, जीवन धन रहा थोरारे ।
हो तपन० ॥

॥ थियेटर की चाल में गाने की चीज़ ॥

(चलती चपला चंचल चाल सुंदरियां अलबेली, इस वज़न पर)

(३२) जसुमत सुतबिन तरपत गात । हित बतियां नहि भाती हो ।
अट पट बैना मुख बोलै । घूंघट पट खोले डोलै ॥हित०॥
(दोहा) मन मोहन मन बस रह्यो, मदन जनावत जोर ।

नित जित तित हेरत फिरत, किति मिलि है चित चोर ।
हो मद माती हो रस राती ॥ हित बतियां० ॥
(") गोपी पिय पिय टेरती, भीत कीयो तन पीत ।
जीवन की परतीत तज, सहती आतप सीत ।
हो धन छाती हो वन जाती ॥ हित बतियां० ॥
(") रोम रोम हरि रम रहा, रैन दिवस नहि चैन ।
तरसत दरशन कारणे, प्रेम पियासे नैन ।
हो घबराती हो ललचाती ॥ हित बतियां० ॥
(") मथुरा पति में रति बढ़ै, मत की गत अस होय ।
विपत सहे सम्पत मिलै, जानत विरलो कोय ।
हो गुण गाती हो सुख पाती ॥ हित बतियां० ॥

(दादरा)

(३३) ब्रज राज आज सांवरो वंसी बजा गयो ॥ ब्रज० ॥
१— बैठी थी अपने घर में मैं सखियों को संग ले ।
वंसी की धुन का तीर अचानक लगा हिये ।
घबराके उठके भागी मैं बाहिर नजर किये ।
वो मंद मुस्करान की बरछी चला गयो ॥ ब्रज० ॥
२— बेचैन हो के गिर गई उस दम जमीन पर ।
वो सांवरा सलौना न आया कहीं नज़र ।
सखियों ने आ उठाया मुझे देख बे खबर ।
मोहन चुरा के चित को न जाने कहां गयो ॥ ब्रज० ॥

६—कहती हूं पक्की बात मैं अपनी ज़बान से।
उसके सितम से धो चुकी हूं हाथ जान से।
मथुरा में जाके कंस पै झगरूंगी कान्ह से।
पूरी सज़ा दिलाऊं मुझे क्यों सता गयो ॥ ब्रज० ॥

(अगिया लागी सुन्दर वन जर गयो, इसके वज़न पर)

(३४) अंखियां लागी मोहन मन बस गयोरे ॥ अंखियां० ॥
कहीं नज़र में वो दिलवर किसी के आजावै।
जमाल यार का फ़ौरन ही मन समाजावै।
मजाल क्या जो कोई और उसको भाजावै।
मगर वो प्यारा लगै उसके गुण जो गाजावै।
कभी वो श्याम ही मन की तपन बुझा जावैरे ॥ अंखियां० ॥
तड़पने में है मज़ा उसकी इन्तिज़ारी में।
जो लुत्फ़ यारी में है कब जहान दारी में।
निकल निकलती है मुशकिल से रात ज़ारी में।
गुज़रती खूब है पल पल ये जांनिसारी में।
भटकते मस्त हैं दीवाने बाग़ो बहारी में रे ॥ अंखियां० ॥
उसी के इश्क़ में आती है हो जो बदनामी।
पसन्द आती है दुनियां की सारी नाकामी।
करै वो चाहै सो बेहतर है जो करै स्वामी।
क़दम हटाने में हो जावै इश्क़ में खामी।
रहै वोह खुश यही सोची है नेक अंजामी रे ॥ अंखियां० ॥
है ये ग़लत कि वो सारे जगत से न्यारा है।

ज़रूर उसको तलबगार अपना प्यारा है।
मगर ये इश्क़ भी खांड़े की तीखी धारा है।
न ऐसे वैसों का इस राह में गुज़ारा है।
है बेखबर नहीं मथुरेश ये सहारा है रे ॥ अखियां० ॥

॥ भजन दादरा ॥

(३५) श्याम गिरधारी हमारी सुध लीजे ॥
तृभुवन स्वामी अन्तर जामी। बेग कृपा अब कीजे ॥
हमारी सुध लीजे ॥ श्याम० ॥
दरस बिना अतिही जिया व्याकुल। हिया ये पल पल छीजे।
हमारी सुध लीजे० ॥
तुम गोपाल दयाल कहावत। जन कों दर्शन दीजे।
हमारी सुध लीजे० ॥
श्री मथुरेश क्लेश के नासक। दूजो नाहि पतीजे।
हमारी सुध लीजे० ॥

॥ ग़ज़ल ॥

(३६) अबतौ सुधले मेरी वंसी के बजाने वारे।
कब बनैगी भला अब मुझकों बिसारे प्यारे ॥
दीन बन्धू है तेरा नाम जहां में रोशन।
दीन मुझसा न कहीं बन्धु नहीं तुझसारे ॥
द्रोपदी की भी तौ फ़रियाद सुनी थी तूने।
गज की खातिर तुही दौड़ाथा पियादा पारे ॥

जान जाती है बिरह ताप सही ना जाती ॥
आप सोचैं कि है बचने कौ सहारा क्यारे ॥
दिनकौ इक छिन भी नहीं चैन कठिन है जीवन ।
कब तलक रात में काटूं अरे गिन गिन तारे ॥
क्लेश भक्तों को नहीं देते दयालू मथुरेश ।
देश भर में तेरी कृपा की सुनी चरचारे ॥

॥ मांड ॥

(३७) बनवारी छबीला म्हे छां थारी चेरी गरीबनवाज़ ॥
आख्यां थासूं लागी जी श्री महाराज ।
अजी हो जी छबीला म्हें छां थारी चेरी गरीबनवाज़ ॥

(दोहा) जद सूं थांकी सांवरी, सूरत देखी नैन ।
नींद गई व्याकुल भई, पलहू नाहीं चैन ।
अजी हो जी छबीला० ॥

(,,) जल बिन जैयां माछली, तडप तडप दे प्राण ।
सोहि दसा म्हांकी भई, थां बिन लीजो जाण ।
अजी हो जी छबीला० ॥

(,,) अधरांरो रस प्यास के, जीव दान देउ आय ।
नातर थांने जग हँसे, मथुरा सुन्यां लजाय ।
अजी हो जी छबीला० ॥

(राग आसावरी अथवा सोरठ)

(३८) बेग दरस देहु श्याम प्राण पति ॥ बेग० ॥

बिन दर्शन पल पल युग के तुल विकल हैं प्राण हमारे ।
प्राण पति बेग दरस० ॥
बीती अवध बगद आवन की नैन लटक रहे द्वारे ॥
कौन चूक दासी की देखी रहे निठुरता धारे ॥प्राण०॥
बिन पावस दोउ नैन झरत हैं चलत सदैव पनारे ।
जिम चातक इक बूंदहि तरसै तिम मग प्राण बिचारे ॥प्राण॥
गोपिन तज मथुरेश हरी तुम मथुरा नगर सिधारे ।
बिरह की दशा बीत रही मोपै यह संकट को टारे ॥
प्राण पति बेग दरस० ॥

(ग़ज़ल)

(घर से यहां कौन ख़ुदा के लिये लाया मुझको, इसके वज़न पर)

(३९) हाय इस इश्क़ ने दीवाना बनाया मुझको ।
किस मुसीबत में गिरिफ़्तार कराया मुझको ॥
श्याम के देखे बिना पल भी नहीं कल दिलको ।
प्रीत के जाल में प्रीतम ने फँसाया मुझको ॥
लग रही आस मगर प्यास है हर दम बढ़ती ।
इश्क़ ने कैसा है यह रोग लगाया मुझको ॥
वस्ल में भी है लगा खौफ़ बिछुट जाने का ।
चैन हरगिज़ न किसी हाल में आया मुझको ॥
आप से होवै न इकदम भी जुदाई मथुरेश ।
इस तमन्ना ने है हर आन रुलाया मुझको ॥

(दिल पाया प्रहारदा पीरो जवानी हुआ शादमां)

(इसके वज़न पर)

(४०) अलमस्ता हूं बावरा नैनों समाया मोरे सांवरा ।
सांवरा सांवरा सांवरा हो ॥ अल० ॥
फीको फीको जगत कछु लागै न नीको अहो प्यारा दुलारा
हमारा मन भावना हो ॥ अल० ॥
श्यामा सहेली मिल वृन्दा विपन में मोहन पिया को
रिझावना हो ॥ अल० ॥
प्यारी प्यारी हसन मन कीनो है घायल अहो बांका बो-
झांका हिये का हुलसावना हो ॥अल०॥
मथुरा निहोरे अब चेरो चरन को प्रीती की रीती
निभावना हो ॥ अल० ॥

[उसी वज़न पर दूसरा पद]

(४१) मन भाई गोपाल की प्यारी रसीली छबि सांवरी ।
सांवरी सांवरी सांवरी हो ॥ मन० ।
कीजै ऐसो जतन मिल जावै विहारी । अहो जारी लेआरी ।
भारी मोय चावरी हो ॥ मन० ॥
बांकी वो झांकी मोरे छाई हगन में । वाकी लगन में हूं
बावरी हो ॥ मन० ॥
जाके सांची लगन सोई मेहु हमारो अहो दुखिया को
दुखिया जनावे कहा सावरी हो ॥ मन० ॥

मथुरा को स्वामी प्यारो जानै है मन की अहो विन्ती
हमारी सुनावरी हो ॥ मन० ॥

(नैनों ने मारी तोरी सैनों ने मारी हारे कन्हैया मारी कटार)

(इसके वज़न पर)

(४२) लूटी सांवरिया वीचै वज़ार ॥
सटकी सहेली मोहि छांड अकली हारी मैं नार ।
लूटी सांवरिया० ॥ १
तिरछी नज़र मोरे बरछी सी लागी, त्यागी मैं सुध बुध भोरी
गंवार ॥ लूटी सांवरिया० ॥ २
चंचल कियो मोय इक पल में घायल, कलना परै करूं कासै
पुकार लूटी सांवरिया० ॥ ३
लखना सकी वाकी बांकी मैं झांकी, प्रेम की फांसी गरे
दई डार ॥ लूटी सांवरिया० ॥ ४
खोटैं कहूं मथुरेश की कैसे, रसिया की छब पर तन मन
दूं वार ॥ लूटी सांवरिया० ॥ ५

(ठुमरी)

(आवत श्याम लचक चल मुकट धरे, इसके वज़न पर)

(४३) मोहन जात निपट छल कपट भरे ।
जब से प्रीत करी कबहु न लगे गरे ॥ मोहन० ॥
चितवन हसन चाल मतवाली सैनन में हू टोना ।
बौरी भई कियो मोपै भारी घात ॥ मोहन० ॥

प्रिय तम वदन चन्द्र परवारी मम दोउ नैन चकोरी ।
मथुरा लखे छवि मनना अघात ॥ मोहन० ॥

(४४)

(ग़ज़ल)

(इस के हर शेर के शुरू के हर्फ़ों के मिलाने से मथुरेश निकलता है)

م मुझे इक पलक में झलक दिखा कोई शोख़ मजनूं बना गया ।
रही तन वदन की न कुछ ख़बर कोई जादू मुझपै चला गया ॥
ت तपे दिलका कैसे बयां करूं छिपा राज़ कैसे बयां करूं ।
कहीं जल न जाये ज़ुवां दहन बड़े ख़ौफ़ दिलमें समागया ॥
ه हमें गाली खाने का शौक़ है उन्हें रूठ जाने का ज़ौक़ है ।
वो मनाने से हों डवल ख़फ़ा ये सितम है किससे सहागया ॥
ر रही जब ख़ुदी तो सनम नथे हुई बेख़ुदी तो वो आमिले ।
यही ज़रिया टाल बताने का नया उनके हाथ में आगया ॥
ی ये ज़माना ख़्वाबो ख़याल है कहीं जी लगाना वबाल है ।
भरा उसमें कैसा कमाल है मेरे फंद डाल चला गया ॥
ش शबो रोज़ मुफ्त सहे अलम न सनम मिला न मिटाही ग़म ।
हुए शाद हम कि पता सनम का हमारे दिलही में पागया ॥

(ग़ज़ल)

(जिसके हर शेर के शुरू के हर्फ़ों के मिलाने से मथुरेश निकलता है)

(४५) م मेरा महबूब जानां क्या अजब अन्दाज़ रखता है ।
व बातिन यारे शातिर है व ज़ाहिर नाज़ रखता है ॥

तहो बाला जहां देखा सनम मौजूद ही पाया।
जहां में हर जुजो कुल से तो पूरा साज़ रखता है॥
हरिक ज़र्रे में नूर उसका हरिक शै में ज़हूर उसका।
रता है फिर भी दूर उसका अजब परदाज़ रखता है॥
रहे पोशीदा क्योंकर आशिक़ों का हाले दिल उससे।
ज़मा हर दिलका अपने दिलमें दिलबर राज़ रखता है॥
मे ज़खमी मुर्ग़े दिल हटकर कहीं भी जा नहीं सकता।
नज़र इसपर वो क़ातिल मिस्ले तीर अन्दाज़ रखता है॥
शहे खूबां की यह तौसीफ़ सुनकर शाद हैं हमतो।
ो अपने आशिक़ों को हरज़मां मुमताज़ रखता है॥

(ग़ज़ल)

(जो मोहन में मनको लगाये हुए हैं, इसके वज़न पर)

मज़ा दे रही है जुदाई तुम्हारी।
पसंद आगई कजअदाई तुम्हारी॥
तजस्सुस की बाक़ी ज़रूरत ही क्या है।
नशस्त अपने ही दिलमें पाई तुम्हारी॥
हरिक तनमें जोबन झलकता है किसका।
नज़र आई जलवा नुमाई तुम्हारी॥
रही कल न पलकी न सुध आज कल की।
तसव्वुर में सूरत जो आई तुम्हारी॥
यह दिल नीम बिस्मिल है छेड़ो न ज़्यादा।

हुई ख़त्म ज़ोर आज़माई तुम्हारी ॥
शबे हिज्र बंसी ही सुनकर हुए शाद ।
सनम कुछ न याद हमको आई तुम्हारी ॥

(४७) ॥ ग़ज़ल ॥

महलक़ा परदे में छिप छिपके न कर वार ज़रा ।
सामने आके करामात दिखा यार ज़रा ॥
तेग़ से आपके मजरूह सनम होगा कौन ।
जानो तन आपसे ख़ाली नहीं दिलदार ज़रा ॥
हर नफ़स बंसी तेरी है मेरी रहेबर कामिल ।
छिप के जाओगे कहां हम भी हैं ऐयार ज़रा ॥
राहे उलफ़त में तेरे हो चुके ग़ारत सदहा ।
क्या बिगड़ जायगा हो जाओ जो ग़म ख़्वार ज़रा ॥
ये है मशहूर कि तुम यार किसी के भी नहीं ।
मेट दो दाग़ यह बन जाओ वफ़ादार ज़रा ॥
शाद हैं हम तो रक़ीबों का यह शिकवा सुन कर ।
बे वफ़ा संग दिलो शोख़ हैं सरकार ज़रा ॥

(४८) ॥ ग़ज़ल ॥

महबूब मेरा मोहन हरजा दरस रहा है ।
उसका नुकीला जोबन आंखों में बस रहा है ॥
तिरछी नज़र कटारी मारी जिगर में कारी ।

क़ातिल हमें रुलाकर क्या ख़ूब हँस रहा है ॥

ه हरदम है फ़िक्र यारों कब राहे इश्क़ तै हो ।

मंज़िल पै पहुंचने को यह दिल तरस रहा है ॥

ر रमज़ो किनाया उसका समझै उसीका आशिक़ ।

क्या जानै जिसका तन मन ग़ैरों में फँस रहा है ॥

ی यार आतिशे मुहब्बत भड़का रहा है दिल में ।

ख़ूने जिगर यह आंसू बनकर बरस रहा है ॥

ش शौक़े विसाल में दिल हर लहज़ा शाद होकर ।

फिर फिर कमर वो शैदा होने को कस रहा है ।

(४१) **(ग़ज़ल)**

م मुहब्बत में सदमे सहे कैसे कैसे ।

तमन्ना तेरी कर रहे कैसे कैसे ॥

س तेरे शौक़ में मस्त बुल बुल हज़ारों ।

चमन में करैं चहचहे कैसे कैसे ॥

ه हमेशा तेरी चाह में चश्म तरसैं ।

उमड़ अश्क दरिया बहे कैसे कैसे ॥

ر रुलाया बहुत अब करो रहम कुछ तो ।

ज़रा देखलो दिल दहे कैसे कैसे ॥

ی यह क्या बे वफ़ाई है वादों को भूले ।

करो याद कल्मे कहे कैसे कैसे ॥

ش शहे ख़ूब रुयां इधर भी तो देखो ।

तड़प कर हैं मुरझा रहे कैसे कैसे ॥

(५०) **(गजल)**

१ मुरारी ज़रा छब दिखा प्यारी ।
मनोहर वो बांकी अदा प्यारी प्यारी ॥
२ तेरी बांसुरी ने किया दिलको घायल ।
सुनादे वो मीठी सदा प्यारी प्यारी ॥
३ हरी नामतेरा तू हर दिलकी कुलफ़त ।
मुहब्बत की दारू पिला प्यारी प्यारी ॥
४ रहे मेरे दिलमें समा पुख़्ता रंगत ।
तू पैरों में मेंहदी लगा प्यारी प्यारी ॥
५ यही हम को काफ़ी है सूरत तुम्हारी ।
तसव्वुर में हो रूनुमा प्यारी प्यारी ॥
६ शफ़ा अपने बीमार को जल्द बख़शो ।
दवा दो अधर की सुधा प्यारी प्यारी ॥

(५१) **(गजल)**

१ मेरे दिलको घायल किया हँस्ते हँस्ते ।
सनम क्या सितम कर दिया हँस्ते हँस्ते ॥
२ तड़प देखकर मेरी खुश होके बोले ।
कहो किसने जादू किया हँस्ते हँस्ते ॥
३ हुई उनको हैरत मुझे पाके ज़िन्दा ।
वो बोले यह क्योंकर जिया हँस्ते हँस्ते ॥

७ रमी तन बदन में मये इश्के दिलवर ।
ग़ज़ब क्यों यह प्याला पिया हँस्ते हँस्ते ॥
८ यह नादां फंसा जाल में मुर्गे दिल क्यों ।
शिकारी ने फुस्ला लिया हँस्ते हँस्ते ॥
९ शिकायत सुनी कुछ न बख्शी तसल्ली ।
चुरा दिलको सटके पिया हँस्ते हँस्ते ॥

[पद]

(५२) हरि रंगराती प्रेमकी माती घरि पल कल ना पावत है ॥
अदाय यार का यह मुर्गे दिल शिकार हुआ ।
नज़र का तीर कलेजे में आर पार हुआ ।
चला वो कहके कहो कैसा आज वार हुआ ।
हुई यह चूक कि उस बे वफ़ा से प्यार हुआ ।
अब काहि सुनाऊं मन पछताऊं जियरा अति घबरावत है ॥
हरि रंगराती प्रेम की० ॥
वो बांकी झांकी मेरे नैनों में समाई है ।
सलौनी सांवरी छब प्यारी मन को भाई है ।
सितम है यह कि मुसीबत भरी जुदाई है ।
यहां तलब है वहां सख़्त बे वफ़ाई है ।
मथुरा तिहारी बाट निहारत आसतैं प्राण रखावत है ॥
हरि रंगराती प्रेम की० ॥

॥ पद राग केदारा ॥

(५३) गिरवर धर मोहन सखि मोमन हर लीनो ।

नैनन बिच सालत सोहि सुन्दर रंग भीनो ।
गिरवर धर मोहन० ॥

दर्शन बिन कलहि नाहि, उन बिन सुख पलहु नाहि ।
बस रह्यो वोहि मन के मांहि, सांवरो नवीनो ॥ गिर० ॥
कासैं कहूं कितकौ जाय, सूझत नहिं कछु उपाय ।
वा बिन कछु ना सुहाय, टोना अस कीनो ॥ गिर० ॥
सूनो सब जग लखात, खान पान नहि सुहात ।
भारी करी मोपै घात, बिरहा दुख दीनो ॥ गिर० ॥
पाऊं कित मथुरा पति, किस बिध सहि जाय बिपति ।
बाढी हिये दर्शन रति, चरनन चित दीनो ॥ गिर० ॥

(भनक सुन छतियां दरक गई रे, इसके वज़न पर)

(५४) दरस बिन अँखियां बरस रहीं रे ॥
सरस नई प्रीत लगाय गयो रसिया ॥ दरस० ॥
मोहन श्याम मेरो मन हर लीनो छतियां धरक रहीं ।
फरक परी चुरियां बैरन भई रतियां ॥ दरस० ॥
अंसुअन धार मोरि तर भई अँगियां मथुरा लगन-
लागी सजन भेजी पतियां निठुर बांकी बतियां ।दर०।

(नाटक की चाल में पद)

(जाओ जाओ छैल मोहि ना सताओ, इसके वज़न पर)

(५५) मानो मानो श्याम निठुरताई न ठानो ॥

हिये की जानौ निठुर्ता न ठानौ ॥ मानौ मानौ हँसीले, लजीले, सजीले, नवीले, मानौ, मानौ० ॥—दया दरसा, रस बरसा, जिन तरसा, हियो हरसा ॥

तुम जानौ रे मोहन सब घट घट की ।
मोरी अंखियां वे बसियां तुमहीं से अटकी ।
मन बस रही छवि नागर नटकी ।
सब दुनियां की चिन्ता हिये से सटकी ।
पल पल हो रही भारी—बढ़ी हिये चाह तुम्हारी ।
मथुरा नाथ बिहारी—तुम्हीं कौ लाज हमारी ।
मानौ मानौ हँसीले, लजीले, सजीले, नवीले, मानौ० ॥

॥ नाटक की तर्ज़ पर पद ॥

(होरे सैयां परूं मैं तोरे पैयां, इसके वज़न पर)

(५६) बंसी वारो जसोधाजू को प्यारोजी समायो नैनों माहीं ॥
बंसी वारो जसोधा० ॥
बिरहा की मारी मोरे तीखी कटारीरे ।
तरसावै क्यों मोको गिरधारी अरे हां ४—
वा की अँखियां रसीली वो नसीली—
रँगीली मोरी गुइयां मिलादे प्यारो सैयां—
मन बसिया, रंग रसिया, अति जसिया, जग हँसिया ॥
नैना तरसै हियो ये घबराय रे हां ५—
मुरझाय, कुमलाय, अकुलाय, तलफाय—

मथुरा मन में बस्योरी दिलदार, रिझवार, सुकुमार, रससार,
बलिहार ॥ बंसी वारो० ॥

॥ नाटक की चाल में पद ॥

(ए दिले मुज़तरिब क्यों बे क़रार है, इसके वज़न पर)

(५७) जी हमैं उस सनम का इन्तज़ार है ॥
मेरे मन में रसीला वो मोहन बसा ।
जी हमैं उस सनम का० ॥
नैनों का तारा, प्यारा हमारा, कान्हा गया मुझको सैनों से मार ।
मेरे मन में बसी उसकी जोबन बहार ।
मैं तो व्याकुल भई त्यागी तन की संभार ।
हुआ तीरे नज़र झट कलेजे में पार ।
जी हमैं उस सनम का० ॥
मैं मनाऊं किस तरह वो सितमगर है यार ।
मथुरा उस की छवि पर बलिहार है ।
जी हमैं उस सनम का० ॥

॥ नाटक की चाल ॥

(बनी बांकी दुलहनियां मोहनीयां, सजीली अलबेली मिली गोरी नार)
(इसके वज़न पर)

(५८) नई लागी लगनियां मगनियां रसीलो अलबेलो लख्यो ।
प्यारो श्याम, वनवारी गिरधारी रसखान, सोभा को धाम ।

नई लागी लगनियां० ॥
है वोही मन का मोहन वा बिना मैं जाऊं किधर जाऊं किधर ।
नई लागी लगनियां० ॥
उस बिन ना, घरि पल चैन,—तरसत हैं व्याकुल नैन ।
अट पटरी निकसत बैन—अरी वाके रंगमें रँगीप्यारीमैं ।
नई लागी लगनियां० ॥
पीतम से है प्यार-जगत पै छार डार-मथुरा है उस पै निसार ।
बार बार ध्यान धरूं राधा वर बाधा हर ।
नई लागी लगनियां० ॥

(नाटक की चाल में)

(भर भर जाम पिला गुल लाला बनादे मतवाला,)
(इसके वजन पर)

(५१) श्री हरि प्रेम पिला रस प्याला मिलादे नंद लाला ।
नंद ला, ला, ला, ला० ॥
नारद ने रस लिया—गोपीयों ने छक पिया ।
मीरां ग्रहन किया—बस कर लिया पिया ।
पीकर वो सूरदास ने कुछ बांट भी दिया ।
नंद ला, ला, ला, ला० ॥
नरसी ने पीके खूब—बस कर लिया महबूब ।
नानिक कबीर आद—दादू ने पाई दाद ।
सन्तों ने सारे भक्तों ने छक चख लिया वो स्वाद ।
नंद ला, ला, ला, ला० ॥

प्याला जो ये पिये—अमरा वो हो जिये।
शुक और व्यासने—कहा ग्रन्थ खास में।
जिये मथुरादास भी उसी जूठन की आस में
नंद ला, ला, ला, ला०—श्री०—॥

(६०) (ग़ज़ल)

(अब तो सुधले मेरी बंसी के बजाने वाले, इसके वज़न पर)

प्रेम भगवत का नहीं जिसमें वो इन्सान नहीं।
जन्म निश्फल है भजा दिल से जो भगवान नहीं ॥ १ ॥
तेरी रक्षा को जो है हर जगह हरदम हाज़िर।
उस को भूला अरे तुझसा कोई नादान नहीं ॥ २ ॥
डूबते गज को उबारा न करी पल भर देर।
शेर बन थंब से निकला किया कुछ मान नहीं ॥ ३ ॥
व्याध भिलनी से अधम और अहल्या पाषान।
जिसने तारे अरे उस पर भी तेरा ध्यान नहीं ॥ ४ ॥
पूतना ज़हर पिला कर भी हुई भव से पार।
फिर भी शक तुझको है क्या कृष्ण दयावान नहीं ॥ ५ ॥
गोपिकाओं के वो आधीन हुआ प्रेम के बस।
जिसका वेदों को हुआ पच के भी कुछ ज्ञान नहीं ॥ ६ ॥
दीन धन हीन सुदामा को किया पल में निहाल।
द्रौपदी लाज रखी इससे तू अनजान नहीं ॥ ७ ॥
भक्ति बस हांका है रथ युद्ध समै अर्जुन का।
प्रभुता का उसे कुछ भी हुआ अभिमान नहीं ॥ ८ ॥

जो हरी की हो शरण उसके वो मेटैं सब पाप ।
बांच गीता को अरे लेता क्यों वरदान नहीं ॥ ९ ॥
बहुत बीती है फ़िजूली में रही थोड़ीसी ।
मथुरा वे चेत है तुझसा कोई अज्ञान नहीं ॥ १० ॥

॥ पद जैपुर की भाषा में ॥

(सुनले विन्ती कन्हैया हमारी रे, इसके वज़न पर)

(६१) नैना थांहीं सुं लाग्या निभाज्योजी ॥

१—थारी नज़र कटारी सुं घायल हुआ छे प्राण ।
अधरांरो रस पिलाय के दे दीजे जीव दान ।
अमृत भरी सुनादो ज़रा बंसुरी री तान ।
चित चोर मुखने मोडो छो या कांई थांकीबान।
म्हाने चरणां सुं बेगा लगाज्योजी ॥ नैना० ॥

२—वांकी लटक पै थांकीजी मनडो अटक रह्यो ।
आंख्यां में रूप थांको छै म्हांके खटक रह्यो ।
मिलवाने थां सुं जीव छो म्हांको भटक रह्यो ।
अबतांई आस के ही बल छे लटक रह्यो ।
प्यारे अब तो मती ना छिटकाज्योजी ॥ नैना० ॥

३—थां का दरस की आस छे हरदम लगी हुई ।
दासी छे थांकी प्रीत के रँग में रंगी हुई ।
किरपा नज़र करो अजी रस में पगी हुई ।
मथुरेश कोडे जावां म्हे थांकी ठगी हुई ।
बेगी बिरहा की आतिस बुझाज्योजी ॥ नैना० ॥

॥ जैपुरी भाषा में ॥

(बनो म्हाने प्यारो लागे हे एमाए, इसके वज़न पर)

(६२) छबीला म्हारो मन हर लीनो हे (एमाए)
सांवलिया रँग भीनो छबीला म्हारो मन०—
१—सलोनी छवि हिये में साले हे (एमाए)
मधुरी रस भरी तान वैरन मुरली दिन धाले ए ॥
२—जगत मुनै गैली बतावै हे (एमाए)
छूटी कुलरी कान कान्ह बिन चैन न आवै ए ॥
३—विहारी जू छे प्रेम का रसिया हे (एमाए)
छांडे कधी ना साथ सुणां छां वो तो भारी जसिया ए ॥
४—हुई री मैं तो चरणां री दासी हे (एमाए)
हरि के विकानी हाथ शरण की लाज निभासी ए ॥
५—मिलादे सखी श्याम रसीलो हे (एमाए)
मथुरा पति रस धाम नवीलो प्यारो छैल छबीलो ए ॥

रतिलक्षण { गुण सुनि जाके देख हग जामें मन लग जाय ।
रति ताही को नाम है प्रथम प्रीत दरसाय ॥ }

(६३) मन मोहनके गुण सुन सखिरी वाहिकी लगन मनमांहि लगी ।
अँखियां दर्शन को तरस रही हियेमें अभिलाष जगी सो जगी ॥
मन मोहन के गुण० ॥
कहैं प्रीतके वसहै वो सांवरिया रस रूप धाम नट नागरिया ।
छवि एक बार जिण उरधरिया वोही प्रीतके मांहि पगी सो पगी ।
मन मोहन के गुण० ॥

हौं जो काल्ह गइ जमुना की तीर मथुरेश लख्यो तहां बल को बीर।
मोरे हिये में उठी सखि भारी पीर में तो प्रेम के रंग रँगी सो रँगी ॥
मन मोहन के गुण० ॥

प्रेमलक्षण { (कैसे हु संकट विघ्न से मिटै नहीं सो प्रेम)
(इस लक्षण का पद)

(६४) कहां लग कहूं प्रेम कठिनाई ॥
या मघ निभै बीर कोई बिरलो, संकट कष्ट विघ्न अधिकाई।
कहां लग कहूं प्रेम० ॥
जब तें मन हरि चरणन अटक्यो, सगरो जगत भयो दुख दाई।
लोक लाज कुल कान विघ्नमहा, निन्दा संकट सह्यो न जाई।
हौंतो सखि हरि हाथ बिकानीं, विधि हूं से नहिं टरूं टराई।
हंसो लोक चाहै नसौ प्रतिष्ठा, बसौ हिये मोर कुंवर कन्हाई।
मथुरा नाथ प्रेम परखैया, प्रेमी के वह सदा सहाई।
कहां लग कहूं प्रेम० ॥

॥ स्नेहलक्षणकापद ॥ { द्रवी भाव जब चित्त हो स्नेह को नेम ॥

(६५) को जानै सखि जो गति मोरी ॥
कहत न बनै कंठ है गद गद हिये प्रेम रस उमग रह्योरी।
रोम रोम मन मोहन छायो बाहिर भीतर श्याम रम्योरी।
रूप मधुरी के दृग प्यासे बनेई रहत नित नेह नयोरी।
छिनछिन द्रवत हियो अतिआतुर नेहनीर नित दृगनछयोरी।
श्रीमथुरेश प्रीति के रसिया मन बासिया रस सार गह्योरी।
को जानै सखि जो गति मोरी ॥

प्रणयलक्षण { मन देह इंद्री दोउनके जब एक मेक होजाय, सो विश्वासी प्रणय है सख्य मंत्रीभाय ।

(कसूंबी की चाल)

(६६) कैसे जताऊं, बताऊं, त्रताऊं, मोरी प्यारी ।
बांकी प्रीत की है रीत ॥ कैसे० ॥
जबतैं लग्योरी २ कान्ह जूतें नेहा, जग भयो बिपरीत ।
कैसे जताऊं, मोरी प्यारी ॥
घर के नगर के, डगर के, हंसत देदे तारी, चौतैं सगरे अनीत ।
कैसे जताऊं, मोरी प्यारी ॥
कोऊ जगतमें २ हितू दीखै नाही, हरि पायो सांचो मीत ।
कैसे जताऊं, मोरी प्यारी ॥
दो तन प्राण मन एकहि २, भई गाढ़ी परतीत ।
कैसे जताऊं, मोरी प्यारी ॥
पिय को सुहावे २ सो मेरे मन भावे, मति नाहि बिपरीत ।
कैसे जताऊं, मोरी प्यारी ॥
हरि सों मिताई २ भईरी आति गाढ़ी, मथुरा रहिये नचीत ।
कैसे जताऊं, मोरी प्यारी ॥

रागलक्षण, पदकाफी { ताके आगे राग है नलि कसूंबी मंजिष्ट ॥

(६७) करौ कोई कोट जतन हों तो रँगीरी सांवरे के रंग ॥
केसर हरदि गुलावि कसूंबी इनको काचो है अंग ।
पाको रंग मजीठ को आली सो मम अंग अभंग ॥ करो० ॥

नैन श्याम पुतिरिन तैं भासै सगरो जगत प्रसंग।
सोहि सांवरो इष्ट हमारो राजै अंग प्रति अंग ॥ करो० ॥
चर अरु अचर जीव जल थल के नभचर कीट पंतग।
सबही श्याम रूप सखि भासैं अलि मातंग कुरंग ॥ करो० ॥
तन इन्द्री मन प्राण हमारो रँग्यो श्याम रुचि संग।
मथुरा पति पद रति मम सांची उमा रमा लखि दंग ॥ करो० ॥

(अनुराग लक्षण) पल पल प्यारो नयो लगै सो अनुराग अभिष्ट

(इक चातुर नारि कर कर सिंगार, इसके वज़न पर)

॥ पद ॥

(६८) सखि कही न जात, कछु मन की बात, मम दृग ल-जात, हिये हु न समात, मोपै भइरी घात, हरि मन हर लीनो ॥ सखि० ॥ वाको रूप नबीनो, पल पल नयो भासै, हौं तो लखि न सकूं दूनी दूनी अभिलासैं, हिये उमग हुलासै, भडकावै रँग भीनो ॥ सखि कही न० ॥ कधि बाल रूप, कधि वय किशोर, नयो रंग रूप, कधि और तौर, मथुरेश नवल बर बस चित छीनो ॥ सखि० ॥

रूढमहाभावलक्षण { प्यारे के सुख में एक पल पीडासही नजाय, महाभावसो रूढहै जगत कष्ट दरसाय.

(ग़ज़ल)

(६९) मुझे निज प्राण तन मन से अधिक नन्दलाल प्यारा है।
उसी की मोहनी मूरत पै तन मन अपना वारा है ॥
उसी के सुख में सुख अपना उसी के दुख में दुख अपना।

वोही हरदम सनम अपना जगत दुख मूल खारा है ॥
उसे गर होवे दुख इक पल तो तड़पूं मैं पडी बे कल ।
रहूं मैं कोट गुनि ब्याकुल विकल गर पल भी प्यारा है ॥
रज़ा में उसकी हूं राज़ी सहूं इक दम न नाराज़ी ।
वोही मथुरेश जीवन प्राण धन सारा हमारा है ॥

{ प्रिय मिलन सुख लेश में कोट ब्रह्मांड सुख नाहिं
{ कोट ब्रह्मांड की पीडा विरह लेश भर नाहिं

(इस लक्षण का पद)

(७०) बन्योरी मेरो वैरी विधिना हाय ॥
अँखियन ऊपर पलक लगाई, यह दुख सह्यो न जाय ॥ १ ॥
नहिं अघात छबि श्याम बिलोकत, नैना रहे लुभाय ।
पलक लगे अन्तर इक पल हूं, कल्प समान विताय ॥ २ ॥
श्याम मिलन सुख लेश बराबर, कोटि ब्रह्मान्ड सुख नाय ।
पीडा कोटि ब्रह्मान्ड की तैं, बिरह लेश अधिकाय ॥ ३ ॥
श्री मथुरेश प्राण बल्लभ बिन, प्राण न सकूं रखाय ।
रूप माधूरी रस पर वारूं, ब्रह्मानन्द कषाय ॥ ४ ॥

[दिव्य उन्माद लक्षण, पद बिहाग]

(७१) कठिन प्रेम संवाद । सखी सुन कठिन० ॥
प्रेम दशा अति वृद्धि पायके होत दिव्य उन्माद ।
सखी सुन कठिन प्रेम० ॥
किलकत हंसत मोद भरि उमगै रस सुख सिन्धु अगाध ।

मन मगनाइ छिन छिन बाढै ज्यों ज्यों पावत स्वाद ।
सखी सुन कठिन प्रेम० ॥
मत्त भई पुन प्रेम दिवानी विचरै तजि सब व्याध ।
हरि रति सुधा पान मतवारी त्यागै सकल मरजाद ।
सखी सुन कठिन प्रेम० ॥
बिरह वृत्ति व्यापै जब छिन हूं मानै परम विषाद ।
हाय हाय रोदन करै बन वन बिसरै न पिय की याद ।
सखी सुन कठिन प्रेम० ॥
पिय ध्यावत पिय रूप होत प्रिया, प्रीतम प्रिया वपु साध ।
कीट भृंगि को न्याव बखानत बेद पुराण अनाद ।
सखी सुन कठिन प्रेम० ॥
बौरी बावरी जगत बतावै करैं लोक बहु बाद ।
श्री मथुरेश भिन्न नहीं मोतैं यही दिव्य उन्माद ।
सखी सुन कठिन प्रेम० ॥

(राग काफी)

(७२) प्रीत रीत प्रिया प्रीतम जानैं ॥ जानैं--प्रीत० ॥
एक प्राण दो देही दीखत रसिक मर्म पहचानै ।
रोम रोम अंग अंग युगल के युगल रूप झलकाने ।
सार याको जानै सयाने ॥ प्रीत० ॥
पलछु दरस परस बिन बीतै मानो कल्प समाने ।
व्यापत बिरह रहे सन्मुख हूं तन सुध बुध बिसराने ।
परस्पर रूप लुभाने ॥ प्रीत० ॥

श्रीमथुरेश बसैं गोकुल में श्यामाजू बरसाने।
अस भ्रम तज जानौ नित संगत बृन्दा विपिन बसाने।
युगल रस प्रेम दिवाने ॥ प्रीत० ॥

(७३) ॥ गज़ल ॥

१–जिधर देखी उधर पाई झलक घनश्याम प्यारे की।
है जो कुछ रोशनी जग में उसी दिलवर हमारे की ॥
२–कँहीं बालक कँहीं बूढ़ा कँहीं जाहिर कँहीं गूढा।
कँहीं चातुर कँहीं मूढा है लीला उस दुलारे की ॥
३–उसी का रंग हर गुल में उसी का प्रेम बुल बुल में।
है खुशबू इश्क़ की कुल में उसी मन हरने वारे की ॥
४–वो हैं जीवों का हितकारी है सच्ची प्रीत उसे प्यारी।
वो धन है गर तलबगारी हो उस प्रीतम के द्वारे की ॥
५–मनोहर सांवरा गिरधर छबीला सोहना नटवर।
करैं झांकी रसिक दिल भर कै मथुरा प्राण प्यारे की ॥

(७४) (ग़ज़ल) क़व्वाली में

जिसने मन्मोहन पियाको दिल दिया सब कुछ किया।
प्याला भगवत प्रेम का जिसने पिया सब कुछ किया ॥
रोना दुनियां की न कुछ चीज़ों की ख़ातिर है फ़िज़ूल।
याद में भगवत की रोना गर किया सब कुछ किया ॥
खाजना उसको हज़ारों कोस नादानी है यह।

दिल क आईने में हर को लख लिया सब कुछ किया ॥
कौन कहता है हरी के रूप रंग कुछ भी नहीं ।
जिसने उसका सब जगह दर्शन किया सब कुछ किया ॥
इश्क़ में मथुरेश के दिल जिसका हर दम चूर है ।
वो अमर होकर जिया पाया पिया सब कुछ किया ॥

(७५) (ग़ज़ल) तथा

अपना जलवा हर जगह हरने तुझे दिखला दिया ।
सोया तू ग़फ़लत की गहरी नींद में यह क्या किया ॥
जाग जल्दी आंजले आंखों में सुरमा प्रेम का ।
सामने हरदम खड़ा देखा नहीं यह क्या किया ॥
प्रीत के वस है पिया क्यों करता है लाखों जतन ।
हाथ में आया रतन खोया अरे यह क्या किया ॥
होता है मथुरेश आशिक़ अपने तालिब पर ज़रूर ।
आज़माया प्रीत कर फिर भी नहीं यह क्या किया ॥

(ग़ज़ल)

(आया करो इधर भी मेरी जां कभी कभी, इसके वज़न पर)

(७६) दिखलाते हो अदायें विहारी नई नई ।
कब तक ये होंगी कारगुज़ारी नई नई ॥
क़ाबू में करके दिल को जिगर पर भी घात है ।
चलती है अब नजर की कटारी नई नई ॥

देखो हमारे पहिलु में बनवारी बैठ कर ।
ज़ख़मे जिगर की बाग़ बहारी नई नई ॥
तरसाते नन्दलाल हो देते नहीं विसाल ।
क्यों टाल चाल करते हो जारी नई नई ॥
मथुरेश पास आके भी पूरण करी न आस ।
हर दम बढ़े है प्यास हमारी नई नई ॥

(मज़ा देते हैं क्या यार तेरे बाल घुंघर वाले, इसके वज़न पर)

गाना

(७७) तुम तौ सांवरिया गोपाल हौ नँदलाल दिल के काले ॥
होवै जो तुम पर कुरबान, उसको फीका ऐश जहान ।
फिर भी करो उसे हैरान, आशिक़ तेरे सब मतवाले ।
तुमतौ सांवरिया गोपाल० ॥ १ ॥
करके जप तप हम भर पूर, मांगा दर्शन का इक नूर ।
फ़ौरन आप हुए काफ़ूर, तन मन सब घायल कर डाले ।
तुमतौ सांवरिया गोपाल० ॥ २ ॥
दिल जो हमने किया निसार, बोले होकर यूं बेज़ार ।
ये है पत्थर सा बेकार, ठोकर दे दे खाये टाले ।
तुमतौ सांवरिया गोपाल० ॥ ३ ॥
हिम्मत करके मथुरा दास, पहुंचा पीताम्बर के पास ।
हरगिज़ होता नहीं निरास, देखैं दामन तो छुड़वाले ।
तुमतौ सांवरिया गोपाल० ॥ ४ ॥

(७८) ॥ ग़ज़ल कव्वाली ॥

हर गुल में रंग हर का जलवा दिखा रहा है।
तालिब को इश्क़ का फ़न बुल बुल सिखा रहा है ॥ हर० ॥
सीमाब बे क़रारी बादल भी अश्क़ बारी।
पर वाना जांनिसारी हर को जता रहा है ॥ हर० ॥
नरगिस ने आंख बन कर देखा उसे नज़र भर।
हर बर्गो बर में जौहर हर का समा रहा है ॥ हर० ॥
होवै जो इश्क़ कामिल हरजा वो तेरे शामिल।
आमिल से जल्द जा मिल क्यों दिल दुखा रहा है ॥ हर० ॥
हर अन्जुमन में तन में बन बन में नन्द नन्दन।
मथुरेश हर चमन में बंसी बजा रहा है ॥ हर० ॥

(७९) ॥ लावणी ॥

इस असार संसार मांहिं हर प्रेम सार है सुख दाई।
चार बेद यही अर्थ उचारैं है अनर्थ छल चतुराई ॥
अं०—चपल भृंगि जिम काठ छेदकर बल कर बाहिर आता है।
मृदुल कमल में प्रेम के बस फंस निश्चल हो रह जाता है।
त्यों मन चंचल योग समाधी तज विषयन कों ध्याता है।
हरि पद कमल मांहिं जब अटके नाहिं सटकने पाता है।
इस कारण हरि प्रेम की महिमा हरिजन संतन है गाई।
चार बेद यही अर्थ० ॥ १ ॥

अं०-आगम निगम पार नहिं पावैं जो प्रभु अलख निरंजन है।
सो भक्तन की रक्षा के हित जग में धारत नर तन है।
जो सुर मुनि योगिन के मन में कठिन तें आवत चिदघन है।
ताहि जसोमत गोद खिलावत अचरज ऊखल बंधन है।
गोपीजन जाय नांच नचावैं प्रेम के वस है यदुराई।
चार वेद यही अर्थ० ॥ ३ ॥
अं०-भज कर आये गज के हित पद रज सें तारी मुनिनारी।
अदभुत धज से बने पौरिया बलिके श्रीपति असुरारी।
शवरी के जूंठे फल खाये दुर्योधन मिसरी खारी।
साग विदुर घर रुच रुच पायो करमा की खिचरी प्यारी।
धन्य धन्य मथुरेश तिहारी प्रीत रीत हम लख पाई।
चार वेद यही अर्थ० ॥ ३ ॥

(८०) **(गज़ल)**

देखा अनोखा माजरा नंद नंदन का दर वदर।
थीं बरसाने की गोपियां उसकी तलव में बे खबर ॥ देखा० ॥
राधाजी जिसका नाम है हुस्न में माहे तमाम है।
सेवक उसका वो श्याम है जो है जहां में जल्वागर ॥ देखा० ॥
सब में उसीका सरूर है उसके ही दम का जहूर है।
प्रेम में उसके जो चूर है है रंजो ग़म से वो बेखतर ॥ देखा० ॥
बंसी है मन की रिझावनी सूरत उसकी लुभावनी।
बानी है दुःख भुलावनी पावै सोही धन है बशर ॥ देखा० ॥
वो मथुरेश ही सार है झूंठा ये सब संसार है।
दिल से जिसे उस में प्यार है आनँद में है वो बेशतर ॥ देखा० ॥

(भजन)

(आओजी आओ मेरे धीर के बंधाने वाले, इसके वज़न पर)

(८१) जाओजी जाओ वहीं रात के बिताने वाले ।
हम को तरसाने वाले, चितके चुराने वाले, मनके सताने वाले,
ग़ैरों के जाने वाले, वंसी बजा के श्याम बावरी बनाने वाले ।
जाओजी जाओ वहीं० ॥

एक नज़र भी जिसने आपका दीदार पाया ।
उसको हमेशा तेरे इश्क़ का बीमार पाया ।
तुझसा चपल नहीं कोई भी दिलदार पाया ।
तेरे बिना न कहीं जीवने क़रार पाया ।
तजी है दुनिया दारी, जगत की चाह विसारी, तेरे चरणों
पर वारी, सुनों मथुरेश मुरारी, कुंज विहारी, गिरवर धारी,
कल मल हारी, माया चारी, दिल के भटकाने वाले ।
जाओजी जाओ वहीं० ॥

॥ नाटक में गाने की चीज़ ॥

(दो फूल हज़ारी लेलो, इसके वज़न पर)

(८२) रे छैल छबीले मोहन- हो छैल छबीले मोहन-अरे
मोहन मोहन मोहन रे छैल० । तेरे हैं नैन कटीले, वो बैना बडे
रसीले, मधुरे हटीले सोहन ॥ रे छैल छबीले मो० ॥
मथुरेश राधिका गोरी-सुन्दर सजीली जोरी-मन कामना
की दोहन ॥ अरे मोहन मोहन मोहन रे० ॥

॥ जुग जुग जीवो श्री महाराज जम जम राज करो ॥
(इसके वज़न पर)

(८३) बन बन राजैं श्री ब्रजराज । नये नये साज सजे ॥ तिरछा मुकुट झुकाय, कँहिं मंद मुसकराय । कँहिं वंसी को वजाय, मुनियों का मन, लुभाय, सोभा धाम, घूंघर वारे बाल सँवारे दिलवर प्यारे सुंदर श्याम । तनक वो किरपा नज़र निहारे छूटैं सारे जग के काम ॥ नंदलाल, छवि रसाल, खुश हाल, मथुरा दास भजे, हो दास भजे ॥
बन बन राजै श्री ब्रजराज० ॥

[चौताला, ध्रुपद]

(८४) श्याम रंग राती एक जोवन की माती वाम, बौरी सी लखाती वन भटकै चिल्लाती है । हाय प्राण प्यारे किस मारग सिधारे नाथ, निसके अँधियारे में गैली हू न पाती है ॥ अति घवराती नैन नीर बरसाती देख धाय मथुरेश वाकी सीरी करी छाती है । बड़ो उत पाती हरि करो अस ख्याती कोऊ हम को तो निश्चै भयो प्रेम को सँगाती है ॥

लीजिये ! लीजिये !! लीजिये !!!

हमारे यहां सब तरह के मारवाड़ी ख़्याल मौजूद हैं, इसके अलावा हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी, बम्बई, दिल्ली, आगरा, मथुरा सब जगह का माल मौजूद है। ज्यादा माल लेने वाले ब्यौपारियों को ५० सैकड़ा कमीशन दिया जायगा।

श्रीरामचन्द्रजी की मुदड़ी	-)	गोपाल सहस्त्रनाम	=)
सूरजकुमर का ख़्याल	-)	पुण्याह वाचन	=)
देवर भौजाई का ख़्याल	-)	वैश्य सन्ध्या	-)॥
फागुन विनोद (गालियों की मार)	-)	रसिक छबीली	-)
गुल गुलाब मन मोहन	=)	सुसराल छत्तीसी	-)
मुकलाया मार चारों भाग	।=)	पन्ना वीरामदे ख़्याल	=)
हरिश्चन्द्र का बड़ा ख़्याल	।)	भरथरी का ख़्याल	।)
निहालदे का बड़ा ख़्याल	।)	नया बारह मासा	=)
आसाडावी का बड़ा ख़्याल	।)	नागजी मारवाड़ी	-)
बनजारे का बड़ा ख़्याल	=)	डुगजी जवरजी	-)
केशरसिंह का बड़ा ख़्याल	=)	दो गोरी का ख़्याल	-)
पूरनमल का बड़ा ख़्याल	।)	सुन्दर नगीना ख़्याल	-)
राजा नल का ख़्याल	।)		

इसके अलावे और बहुत सी नई तरह की किताबें हमारे यहां मिलती हैं। एक आने का टिकट भेजकर सूचीपत्र मंगाइये।

मथुराप्रसादजी की बनाई हुई किताबें सब यहां मिलती हैं।

नग़मे प्रेम उर्दू हिस्सा अव्वल	१)	श्रीमथुरेश प्रेम पत्रिका	।)॥
नग़मे प्रेम हिस्सा दूसरा	-	श्रीमथुरेश बीन सुधार	।)॥
श्रीमथुरेश प्रेम संहिता		श्रीमथुरेश प्रीति पुष्पाञ्जली	।)॥
श्रीमथुरेश महोत्सव		श्रीमथुरेश नरसी नाटक	॥)
श्रीमथुरेश गीता	॥=)	श्रीमथुरेश रूपमती नाटक	१)
श्रीमथुरेश अजामेल नाटक	।,॥		

ऊपर लिखी हुई पुस्तकें सब हमारे यहां मिलती हैं।

सब माल मिलने का पता—

बाबू कन्हैयालाल बुकसेलर

तिरपोलिया बाज़ार जयपुर सिटी।